खबर जो सत्य उगले...

प्रचण्ड समय

हिंदी दैनिक समाचार पत्र

संपादक - अश्वनी वर्मा
70180-86211
prachandsamay.com

वर्ष-5, अंक-130, पृष्ठ-8, मूल्य- 6 रुपए

आरएनआई नंबर- एचपीएचआईएन/2019/79889

हिमाचल का सबसे तेज बढ़ता अखबार

सुविचार

"तुम पानी जैसे बनो
जो अपना रास्ता खुद
बनाता है,
पत्थर जैसे ना बनो जो
दूसरों का भी रास्ता
रोक लेता है।"

केकेआर को चीयर... पेज-8

मोदी, भजनलाल, गहलोत सहित कई नेताओं की... पेज-6

शिमला, मंगलवार, 16 अप्रैल, 2024

बीजेपी प्रत्याशी कंगना रनौत ने दलाई लामा से की मुलाकात, बोलीं- इस अनुभव को जीवन भर संजो कर रखूंगी

प्रचण्ड समय . शिमला

मंडी संसदीय क्षेत्र से भाजपा प्रत्याशी कंगना रनौत ने सोमवार को धर्मशाला में तिब्बती धर्मगुरु दलाई लामा से मुलाकात की।

दलाई लामा से मिलने के बाद कंगना रनौत ने मीडिया से बातचीत में कहा कि "यह दिव्य था। यह एक ऐसा अनुभव था जिसे मैं जीवन भर संजोकर रखूंगी। ऐसे व्यक्ति की उपस्थिति जिसके चारों ओर सरासर दिव्यता है, इसलिए यह मेरे और पूर्व सीएम (जयराम ठाकुर) के लिए बहुत भावनात्मक था। यह कुछ ऐसा है जिसे मैं जीवन भर संजोकर रखूंगी।"

कंगना रनौत मंडी संसदीय क्षेत्र से भाजपा की प्रत्याशी हैं और यहीं से कांग्रेस के प्रत्याशी विक्रमादित्य सिंह इनके खिलाफ चुनावी मैदान में हैं। हाल ही में ही में इन दोनों के बीच जुबानी वार-पलटवार चल रहा है। कंगना रनौत ने विक्रमादित्य सिंह को छोटा पप्पू कह कह डाला था। जिसके बाद दोनों में विवाद गहराता जा रहा है और जुबानी वार पलटवार लगातार जारी है।

भरमौर दौरे पर बोलीं कंगना रनौत

मंडी संसदीय क्षेत्र के अंतर्गत आते जिला चंबा के भरमौर विधानसभा क्षेत्र के दौरे को लेकर कंगना ने कहा कि वह भरमौर जाने के लिए खासी उत्साहित हैं।

कंगना ने कहा कि चंबा, हिमाचल प्रदेश का सबसे खूबसूरत स्थान है। भरमौर जो कि मेरे संसदीय क्षेत्र मंडी, जहां से मैं चुनाव लड़ रही हूं, भरमौर की उन्नति और तरक्की के लिए हम काम करेंगे। दलाई लामा से मिलने पहुंची कंगना को देखने के लिए तिब्बती समुदाय के लोगों की खासी भीड़ जमा थी।

तिब्बती लोग कंगना को बार-बार पुकार रहे थे। इस दौरान तिब्बती युवाओं व युवतियां ने कंगना के साथ सेल्फी भी ली। जिसने भी कंगना से सेल्फी के लिए आग्रह किया, किसी को भी कंगना ने निराश नहीं किया।

प्रचण्ड समय स्कैंडल सीरियल

लेखक
अश्वनी वर्मा

कंगना से उम्मीद कांगड़ा के उम्मीदवार राजीव भारद्वाज को भी

प्रचण्ड समय

कंगना के ग्लैमर का जादू पूरे हिमाचल में क्या सिर चढ़कर बोल रहा है। ऐसा लगने लगा है कि हिमाचल मे भाजपा की तारणहार बनकर आई है कंगना रनौत। मंडी संसदीय क्षेत्र में तो उन्होंने खुलकर प्रचार किया है। उनकी जरूरत भाजपा के दूसरे उम्मीदवारों को भी है। यही कारण है कि कंगना कांगड़ा संसदीय क्षेत्र में भाजपा के उम्मीदवार राजीव भारद्वाज के प्रचार के लिए कंगना कांगड़ा में पहुंच गई। हिमाचल की अनेखी और कांग्रेस के भ्रष्टाचार को लेकर खूब बोली। क्या भाजपा को सभी सीटों पर ग्लैमर का तड़ा चाहिए। कंगना के कांगड़ा दौरे से तो आज ऐसा ही लगा।पर कांगड़ा में तो शांताकुमार सरीखे ओजस्वी भाषण देने वाले लेकप्रिय नेता हैं। फिर भी कंगना की वहां जरूरत तो समझ सकते हैं कि शायद फिल्म तारिका की झलक पाने के युवा बेताब है। अब सवाल तो उठेगा ही कि शायद हमीरपुर संसदीय क्षेत्र में युवा आइकन अनुराग ठाकुर को भी उनकी जरूरत पड़े।

क्या आस्था अग्निहोत्री हमीरपुर से चुनाव में उतरने के लिए तैयार है

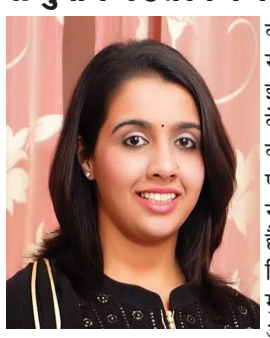

कांग्रेस हमीरपुर संसदीय क्षेत्र से इस बार भाजपा के अनुराग ठाकुर को घेरने के लिए पूरी तरह से गंभीर नजर आ रही है। यही वजह है कि वहां से उप मुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री या उनकी बेटी आस्था अग्निहोत्री को चुनाव लड़ाने की तैयारियां की जा रही हैं। मुकेश अग्निहोत्री तो ना नुकर करते नजर आ रहे हैं लेकिन कहा जा रहा है कि आस्था अग्निहोत्री को इस सूरत में चुनाव लड़ाया जा सकता है, अगर मुकेश अग्निहोत्री पूरी तरह से चुनाव लड़ने से इन्कार कर दें। मुकेश अग्निहोत्री उप मुख्यमंत्री हैं और ऊना जिले से ताल्लुक रखते हैं। ऊना जिला भी हमीरपुर संसदीय क्षेत्र से आता है। हमीपुर जिले से मुख्यमंत्री सुखविन्द्र सिंह सुक्खू आते हैं। इस कारण मुख्यमंत्री और उप मुख्यमंत्री दोनों के लिए ही हमीरपुर संसदीय सीट प्रतिष्ठा का सवाल है। यही कारण है कि इस सीट पर मुकेश और उनकी बेटी आस्था अग्निहोत्री पर गंभीर चिंतन हो रहा है। वहां टिकट लटकने की एक वजह यह भी है।

'जल्द घोषित होंगे दो लोकसभा प्रत्याशियों के नाम'

प्रचण्ड समय . शिमला

शिमला। कांग्रेस पार्टी ने हिमाचल प्रदेश में चार लोकसभा सीटों में से दो प्रत्याशी उतार दिए हैं, जबकि दो अन्य सीटों पर अभी प्रत्याशी तय नहीं हुए हैं।

यह जानकारी कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष प्रतिभा सिंह ने देते हुए कहा कि कांग्रेस पार्टी शीघ्र दो सीट पर प्रत्याशी का चयन कर लेगी। हाईकमान के समक्ष सर्वे की रिपोर्ट भी रखी गई है। जल्द बेहतर और जिताऊ प्रत्याशी मैदान में उतार दिए जाएंगे।

प्रतिभा सिंह ने कहा कि मंडी से विक्रमादित्य सिंह को इस बार प्रत्याशी बनाया गया है। मंडी के लोगों का कांग्रेस को पहले भी आशीर्वाद मिलता रहा है। उन्होंने कहा कि स्वर्गीय वीरभद्र सिंह भी मंडी से सांसद रहें हैं अब विक्रमादित्य सिंह को भी मंडी की जनता का प्यार मिलेगा।

वहीं, भारतीय जनता पार्टी के संकल्प पत्र को प्रतिभा सिंह ने चुनावी करार देते हुए कहा कि इससे पहले भी दो चुनावों में भाजपा ने लोगों से रोजगार, महंगाई को लेकर कई वादे किए थे जो आज तक पूरे नहीं हुए। देश के लोग बुद्धिजीवी हैं और सब जानते हैं कि किसे वोट करना है।

बिलासपुर में रफ्तार का शिकार हुई कार, खाई में समाई; बुजुर्ग दंपती की मौत, दो घायल

प्रचण्ड समय . शिमला

हिमाचल प्रदेश के जिला बिलासपुर में पुलिस थाना बरमाणा के तहत देलग के पास एक तेज रफ्तार कार 50 मीटर खाई में गिर गई। हादसे में बुजुर्ग दंपती की मौत हो गई। वहीं, एक दंपती गंभीर रूप से घायल है। घायलों का उपचार क्षेत्रीय अस्पताल में चल रहा है। पुलिस ने मामला दर्ज कर आगामी कार्रवाई शुरू कर दी है।

पुलिस को दिए बयान में अमरेंद्र कुमार निवासी गांव कनौण डाकघर धौण कोठी तहसील सदर ने बताया कि यह घर से अपने ट्रक को लेकर खन्ना जा रहा था। यह देलग में नाले के पास अपने ट्रक को खड़ा कर साफ कर रहा था।

उसी समय कंदरौर की ओर से एक तेज रफ्तार कार आई और मोड़ से नीचे 50 मीटर खाई में गिर गई। कार में दो पुरुष और दो महिलाएं सवार थी।

इन चारों को उपचार के लिए क्षेत्रीय अस्पताल बिलासपुर ले जाया गया। जहां पर चिकित्सकों ने बुजुर्ग दंपती को मृत घोषित कर दिया। वहीं घायल दंपती का इलाज चल रहा है।

मृतकों की पहचान

मृतक दंपती की पहचान सुभाष कुमार (57) पुत्र धनीराम और रंजना देवी (55) निवासी गांव झज्जर डाकघर गेहड़वीं तहसील झंडूता के रूप में हुई है। घायल दंपती की पहचान अंकुश कुमार और अंकिता कुमारी निवासी गांव झज्जर डाकघर गेहड़वीं तहसील झंडूता के रूप में हुई है। मामले की पुष्टि डीएसपी मुख्यालय मदन धीमान ने की है।

76 साल का हुआ हिमाचल, 7 से 82.80 % पहुंची साक्षरता दर; राज्य स्तरीय समारोह राजधानी में

प्रचण्ड समय . शिमला

हिमाचल प्रदेश 76 साल का हो गया। 15 अप्रैल, 1948 के दिन यह राज्य अस्तित्व में आया था। राज्यस्तरीय समारोह हिमाचल दिवस का आयोजन रिज मैदान शिमला में होगा। इसमें राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल राष्ट्रीय ध्वज फहराएंगे। आमतौर पर 15 अप्रैल को आयोजित किए जाने हिमाचल दिवस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में मुख्यमंत्री ही उपस्थित होते हैं, मगर इस बार लोकसभा चुनाव के चलते आदर्श चुनाव आचार संहिता लगी है। इसलिए इस बार राज्यस्तरीय समारोह की अध्यक्षता राज्यपाल करेंगे। रिज मैदान पर यह समारोह 11 बजे होगा। इस अवसर पर सभी जिलों के लोक कलाकार भी रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति देंगे।

76 साल में 7 से 82.80 फीसदी पहुंची साक्षरता दर

15 अप्रैल, 1948 में पंजाब और शिमला के 30 पहाड़ी राज्यों के विलय के बाद अस्तित्व में आए हिमाचल प्रदेश ने अब तक कई मुकाम छुए हैं। हर क्षेत्र में शून्य से शुरुआत करने वाला हिमाचल आज हर क्षेत्र में आगे है।

1948 में हिमाचल प्रदेश में साक्षरता दर सात फीसदी थी, जो कि आज 76 साल बाद 82.80 फीसदी तक पहुंच चुकी है। प्रदेश में तीन एयरपोर्ट हैं, जिनकी 1948 में संख्या शून्य थी। स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी प्रदेश ने अग्रणी मुकाम हासिल किया है। शून्य से शुरुआत करने वाले हिमाचल में अब एक एम्स, एक सेटेलाइट पीजीआई सहित पांच मेडिकल कॉलेज, पांच डेंटल कॉलेज, कई नर्सिंग और फार्मेसी कॉलेज हैं। शिक्षा के क्षेत्र में हिमाचल के पास एक ट्रिपल आईटी, एक आईआईटी, तीन स्वायत इंजीनियरिंग संस्थान और दर्जनों इंजीनियरिंग कॉलेज हैं। यहां पर प्रदेश ही नहीं, बल्कि देश के दूसरे राज्यों के छात्र शिक्षा ग्रहण करने आ रहे हैं। वर्ष 1948 में हिमाचल के लोगों की प्रति व्यक्ति आय 240 रुपये थी, जो कि मौजूदा समय में 2,35,199 रुपये पहुंच चुकी है।

कब किसके हाथ में रही सत्ता की डोर

1948 से लेकर हिमाचल ने लंबी यात्रा तय की है। प्रदेश ने कई सरकारें देखीं। इसने राज्य को आर्थिक निर्भरता की ओर अग्रसर किया है। पहाड़ी भाषा, भौगोलिक आधार और संस्कृति के दर्शन से हिमाचल की एक अलग पहचान बनाने वाले महान स्वतंत्रता सेनानी और समाज सुधारक यशवंत सिंह परमार 1952 से 1977 तक हिमाचल के पहले मुख्यमंत्री रहे। ठाकुर राम लाल 1977 और 1980 में दो बार मुख्यमंत्री बने। शांता कुमार 1977 और 1990 में दो बार ढाई-ढाई वर्ष के लिए सत्ता में रहे। वीरभद्र सिंह 1985, 1993, 2003, 2012 और 2017 में रिकॉर्ड छह बार मुख्यमंत्री रहे। इस बीच 1998 और 2007 में प्रेम कुमार धूमल ने सत्ता संभाली। 2017 में जयराम ठाकुर मुख्यमंत्री बने। 2023 से सुखविंद्र सिंह सुक्खू सत्ता में हैं।

हिमाचल का इतिहास

स्वतंत्रता से पहले छोटे-छोटे राज्यों में विभाजित प्रदेश 15 अप्रैल, 1948 संस्कृत के 'हिमा' (बर्फ) और 'अचला' (पर्वत) के संधि से उत्पन्न शब्द हिमाचल भारत का एक कमिश्नर प्रोविंस बना। पंजाब और शिमला के 30 पहाड़ी राज्यों जैसे भगत, भज्जी, बाघल के भारतीय संघ में विलय के परिणामस्वरूप भारतीय संघ (कमिश्नर प्रोविंस) के एक राज्य के रूप में अस्तित्व में आया। बेजा, बलसन, बुशहर, चंबा, दरकोटी, देलथ, ढाडी, धामी, घुंड, जुब्बल, खनेटी, क्योंथल, कोटी, कुमारसैन, कुनिहार, कुठार, मंडी मधान, महलोग मांगल, रतेश, रेविनीगढ़, सांगरी, सिरमौर, सुकेत, थरोच, और ठियोग रियासतों को भी शामिल किया गया। उस समय राज्य में चार जिले चंबा, महासू, मंडी और सिरमौर थे। इसका क्षेत्रफल 27,16,850 हेक्टेयर था। भारतीय संविधान लागू होने के साथ 26 जनवरी, 1950 को हिमाचल प्रदेश 'ग' श्रेणी का राज्य बन गया। 1954 में 31वीं रियासत को हिमाचल के साथ एकीकृत किया गया। इससे 1,06,848 हेक्टेयर क्षेत्र के साथ एक और जिला जुड़ गया।

हिमाचल प्रदेश, एक जुलाई 1956 में केंद्रशासित प्रदेश बना। 1966 में प्रशासनिक कारणों से महासू जिले से अलग होकर किन्नौर का एक नया सीमावर्ती जिला बनाया गया। 1 नवंबर, 1966 को पंजाब राज्य के पुनर्गठन के साथ चार और पहाड़ी जिले कांगड़ा, कुल्लू, लाहौल-स्पीति और शिमला, अंबाला जिले की नालागढ़ तहसील, होशियारपुर जिले की ऊना तहसील के कुछ हिस्से और गुरदासपुर जिले के डलहौजी को हिमाचल में मिलाया गया। इससे इसका क्षेत्रफल लगभग 100 प्रतिशत बढ़ गया। 25 जनवरी, 1971 को इस प्रदेश को पूर्ण राज्य का दर्जा दिया गया। एक सितंबर, 1972 को कांगड़ा जिले से दो और जिले, हमीरपुर और ऊना बनाए गए। महासू जिले को हटाकर सोलन को भी एक जिले का नाम दिया गया।

प्रचण्ड समय

अब रोजाना देखें प्रचण्ड समय का ई-पेपर
www.prachandsamay.com पर

न्यूज ब्रीफ..

पूर्व सैनिक ने बंजर जमीन पर उगा दिया केसर

प्रचण्ड समय

जवाली . कहते हैं कि हिम्मत और कुछ कर दिखाने का जज्बा हो तो मिट्टी से भी सोना निकाला जा सकता है। ऐसा ही कुछ कर दिखाया है विधानसभा क्षेत्र जवाली के अधीन आती पंचायत सुकनाडा के पूर्व सैनिक महेंद्र सिंह ने। महेंद्र सिंह ने बंजर जमीन पर केसर पैदा कर इस कहावत को सच कर दिखाया है। महेंद्र सिंह ने फिलहाल चार मरला जमीन पर ही केसर की बिजाई कर रखी है और अब इसके फूल तोड़कर एकत्रित कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि अगली बार एक कनाल से ज्यादा भूमि पर केसर की खेती की जाएगी।

बता दें कि महेंद्र सिंह पठानिया ने सेना में करीब 17 साल सेवाएं दी और सेवानिवृत होने उपरांत पुश्तैनी जमीन पर खेतीबाड़ी में जुट गए। वह कृषि सेवा सहकारी सभा में बतौर सचिव पद पर अपनी सेवाएं भी दे रहे हैं। उन्होंने कहा कि कृषि कार्य में उनकी पत्नी संतोष कुमारी भी लगन के साथ हाथ बंटाती है। महेंद्र सिंह ने बताया कि उनके एक दोस्त ने उन्हें केसर की खेती के लिए प्रेरित किया और केसर बीज भी दोस्त ने ही उपलब्ध करवाया। महेंद्र सिंह ने अक्तूबर महीने में करीब चार मरले भूमि में केसर की बिजाई की जोकि अब तैयार होकर अपनी फसल देने लगे हैं। अब हर दूसरे दिन केसर के फूल तोड़कर एकत्रित कर रहे हैं।

महेंद्र सिंह ने बताया कि उन्होंने करीब तीन कनाल भूमि में हिमालय द्वितीय किस्म के परमल चावल की भी बिजाई की थी और अच्छी फसल हुई। उन्होंने कहा कि खेतों में पर्याप्त सिंचाई के लिए पानी मिले तो नगरोटा सूरियां क्षेत्र के युवा छोटी मोटी नौकरी के लिए इधर उधर भटकने की बजाए नगदी फसलें उगाने की तरफ ध्यान देकर एक अच्छी आजीविका चला सकते हैं। उन्होंने कहा कि नगरोटा सूरियां क्षेत्र में लोगों के पास खेतीबाड़ी के लिए उपजाऊ भूमि तो उपलब्ध है लेकिन सिंचाई सुविधा के अभाव में फसल की अच्छी पैदावार से वंचित रह जाते हैं। उन्होंने सरकार से आग्रह किया है कि किसानों के खेतों तक पानी पहुंचाने के लिए योजना बनाई जाए ताकि खेतीबाड़ी से पीछे हट रहे युवाओं को अच्छी किस्म की नगदी फसल की पैदावार के लिए प्रेरित किया जा सके।

प्रदेश में तीन दिन येलो अलर्ट

प्रचण्ड समय

शिमला . प्रदेश में आगामी तीन दिन तक मौसम खराब रहेगा। विभाग ने येलो अलर्ट जारी किया है। इस दौरान अलग-अलग स्थानों पर बारिश के साथ तेज हवाएं चलने की चेतावनी दी गई है। इस दौरान उच्च पर्वतीय क्षेत्रों में बर्फबारी की भी संभावना बनी हुई है। मैदानी इलाकों में 40-50 किलोमीटर की रफ्तार से तेज हवाएं चलने की भी संभावना जताई गई है। यलो अलर्ट का असर 11 जिलों में रहेगा। बारिश का असर फलों, फसल और सब्जियों पर पडऩे की बात मौसम विभाग ने कही है। बीते चौबीस घंटे के दौरान कोठी में 9.4, मनाली में 7.0, डलहौजी में पांच मिलीमीटर, जोत में चार और चंबा में तीन मिलीमीटर बारिश दर्ज हुई है।

इसके अलावा सराहन, कोटला और पालमपुर में दो-दो, कंडाघाट में 1.4, धर्मशाला में 1.4, कुकुसमेरी में 1.1, कुफरी में एक सेंटीमीटर और बिलासपुर में 0.5 मिलीमीटर बारिश दर्ज की गई है। बीते 24 घंटे में प्रदेश के किसी भी हिस्से में बर्फबारी नहीं हुई है। हालांकि ताजा बारिश के बाद ऊंचाई वाले क्षेत्रों में ठंड बढ़ गई है। प्रदेश के औसतन तापमान में दो डिग्री सेल्सियस की गिरावट देखने को मिली है। रविवार को कुकुसमेरी में तीन डिग्री, मनाली में तापमान चार डिग्री, कल्पा में पांच डिग्री, शिमला में तापमान 11 डिग्री, सोलन में 12.1 डिग्री और धर्मशाला में 14 डिग्री तापमान दर्ज किया गया है। प्रदेश में रविवार को अधिकतम तापमान 34 डिग्री बिलासपुर में दर्ज हुआ है। बारिश के बाद प्रदेश में 116 सडक़ें बंद हो गई हैं। इनमें सबसे ज्यादा 111 सडक़ें लाहुल-स्पीति में ठप पड़ी हैं। इसके अलावा कुल्लू में तीन, चंबा और कांगड़ा में एक-एक सडक़ बंद है। इसके अलावा तीन नेशनल हाईवे भी बंद हैं। जबकि 12 ट्रांसफार्मर बंद पड़े हैं।

गरीब कल्याण व विकास की ओर दृढ़-संकल्पित भाजपा का घोषणा पत्र : राजीव बिंदल

प्रचण्ड समय . शिमला

प्रधानमंत्री मोदी की गारंटी 24 कैरेट सोने जैसी खरी व स्पष्ट है। विकसित भारत के संकल्प और मोदी की गारंटी के द्वारा भाजपा ने अपना लक्ष्य संकल्प पत्र के माध्यम से सामने रखा है। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष डॉ राजीव बिंदल ने शिमला में मीडिया से बात करते हुए कहा कि भाजपा ने अपने 2019 के संकल्प पत्र में किए गए वायदे पूरे किए है जिसमें मुख्य रूप से धारा 370 समाप्त करना, नारी शक्ति अधिनियम में 33 प्रतिशत आरक्षण देना, राम मंदिर निर्माण करना, गरीब कल्याण, 80 करोड लोगों को मुफ्त राशन देना और 25 करोड लोगों को गरीबी रेखा से निकलने जैसे अनेक उदाहरण है, जो प्रधानमंत्री मोदी ने अपने पिछले कार्यकाल में पूरे किए हैं।

उन्होंने कहा भाजपा ने इस संकल्प पत्र के लिए पूरे देश भर से 15 लाख से ज्यादा सुझाव एकत्रित किए गए। इन सुझावों को एकत्रित करने के लिए विभिन्न माध्यमों का प्रयोग 4 लाख नमो ऐप के माध्यम से 10 लाख वीडियो और संदेश के माध्यम से एकत्रित कर अंतिम रूप दिया गया।

उन्होंने कहा 70 साल और उससे अधिक की उम्र के सभी बुजुर्गों को आयुष्मान योजना के तहत 5 लाख तक का मुफ्त ईलाज, आने वाले पांच साल में सेवा, सुशासन और गरीब कल्याण की गारंटी, पांच साल तक मुफ्त राशन, पानी व गैस कनेक्शन और पीएम सूर्यघर योजना से जीरो बिजली बिल। मध्यम वर्ग परिवारों के लिए पक्के घर, स्वास्थ सेवाओं का विस्तार, नेशनल एजुकेशन पॉलिसी लागू होगी, हर नागरिक को हाई क्वालिटी शिक्षा प्राप्त होगी।

युवाओं के लिए इंफ्रास्ट्रक्चर, इन्वेस्टमेंट, मैन्युफैक्चरिंग, हाई वैल्यू सर्विसेज, स्टार्टअप व टूरिज्म और खेल के द्वारा लाखों रोजगार के अवसर मिलेंगे। नारी तू नारायणी के तहत आने वाले समय में 3 करोड़ लखपति दीदी बनाएंगे। महिला सेल्फ हेल्प ग्रुप को सर्विस सेक्टर से जोड़कर नए अवसर प्रदान करेंगे व महिलाओं में स्वाईकल कैंसर के ईलाज पर विशेष ध्यान दिया जाएगा और नारी वंदन अधिनियम को लागू करेंगे।

बीज से बाजार योजना के तहत किसानों की आय बढ़ाने के लिए काम किया जाएगा, श्रीअन्न योजना को सुपर फूड की तरह स्थापित किया जाएगा, नैनो यूरिया और प्राकृतिक खेती से जमीन की सुरक्षा होगी, कृषि इंफ्रास्ट्रक्चर का विकास किया जाएगा, मछुआरों के लिए नाव का बीमा, फिश प्रोसेसिंग यूनिट, सैटेलाइट के जरिये समय पर जानकारी इन सब को मजबूत करेंगे, मछली पालकों को सी-वीड और मोती की खेती के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा।

उन्होंने कहा कि ओबीसी, एससी, एसटी समुदायों को जीवन के हर क्षेत्र में सम्मान दिया जाएगा। भारत को ग्लोबल मैन्युफैक्चरिंग हब बनाने की गारंटी, अर्बन हाउसिंग, ट्रांसपोर्टेशन, वाटर मैनेजमेंट, साफ हवा, कचरे के ढेर से मुक्ति और स्वच्छ पानी के लिए मिशन मोड पर काम होगा, विश्वभर में रामायण उत्सव मनाएंगे और अयोध्या का विकास होगा।

उन्होंने कहा कि 5-जी नेटवर्क टेक्नोलॉजी का विस्तार किया जाएगा और 6-जी पर विस्तार का काम किया जा रहा है। भ्रष्टाचार के खिलाफ अधिक सख्त कार्रवाई होगी, भारतीय न्याय संहिता लागू होगी, वन नेशन-वन इलेक्शन के साथ ही कॉमन इलेक्टोरल रोल की व्यवस्था होगी। समृद्ध भारत के लिए विश्वकर्मा योजना के तहत छोटे ट्रेडर्स को स्किल सिखाने, क्रेडिट देने, और उनके उत्पादन को बाजार से जोड़ने की मोदी गारंटी हमारी सरकार पूरा करेगी।

प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि भारत को विश्व की तीसरी बड़ी आर्थिक शक्ति बनाने की गारंटी मोदी सरकार की है व 2047 तक भारत को एक आत्मनिर्भर बनाने का लक्ष्य हर हाल में पूर्ण होगा, पिछली सरकारों की अपेक्षा हमने नागरिकों को पारदर्शी और जवाबदेह शासन प्रदान किया है और आने वाले समय में भी इसके लिए कृतसंकल्पित हैं।

दर्जनों बच्चों का भविष्य अंधकार में, बीएससी 2019 बैच के प्रैक्टिकल 5 साल बाद भी नहीं

प्रचण्ड समय . मंडी

इग्नू के मार्फत डिग्री लेने का सपना संजोए लगभग 15 छात्र 5 सालों से प्रैक्टिकल परीक्षा न लेने के कारण अधर में लटके हुए हैं। बता दें कि इग्नू के मंडी स्थित अध्ययन केंद्र में इन बच्चों ने बीएससी जनरल में 2019 के बैच में प्रवेश लिया। इसी बीच कोरोना के कारण प्रथम वर्ष में इन्हें प्रमोटिड कर दिया गया। दूसरे वर्ष पेपर कोरोना के कारण देरी से हुए। तीसरे वर्ष के पेपर दिसंबर 2022 में पूरे हो गए लेकिन 2022 में द्वितीय वर्ष के प्रैक्टिकल के समय बताया गया कि प्रथम वर्ष के प्रेक्टिकल भी होंगे। यह भी बताया गया कि उन्हें सिर्फ थ्योरी में प्रोमोट किया गया है।

यह सुन कर बच्चे परेशान हुए लेकिन प्रैक्टिकल के लिए हामी भरी परंतु उन्हे मंडी केंद्र से प्रेक्टिकल की डेट नहीं मिली। कुछ ने हमीरपुर जाकर अगस्त सितम्बर 23 में प्रथम वर्ष के प्रेक्टिकल दिए। अधिकतर हमीरपुर नहीं जा पाए क्योंकि 25 से 30000 तक का रहने ठहरने खानें पीने व अन्य खर्च का जुगाड़ नहीं कर पाये। कुछ बच्चे अन्य, संस्थानों में लंबा अवकाश न मिलने के भी नहीं जा पाए। अब ये बच्चे प्रेक्टिकल के लिए कभी अध्ययन केंद्र मंडी तो कभी क्षेत्रीय केंद्र शिमला के चक्कर काट रहे हैं । उन्हें दिलासे के सिवा अभी तक कुछ नहीं मिला। अब तो उन्हें यह भी कहा जा रहा हैं कि प्रत्येक प्रेक्टिकल के लिए अलग अलग जगह जाना पड़ेगा। इग्नू का मतलब ही बच्चों को सुविधा देने से है ताकि दूसरे कार्यों के साथ बच्चे पढ़ाई कर सके लेकिन इग्नू 2019 का यह बैच मझधार में किनारा ढूंढ रहा है। दूसरी ओर कॉलेज के रेगुलर क्लास वाले विद्यार्थियों को फर्स्ट व सेकंड ईयर वालों को प्रमोट कर दिया गया। आज तक इन बच्चों के फाइनल ईयर के प्रैक्टिकल भी नहीं हुए हैं। इसके चलते उन्होंने दो साल को बचाने के लिए एक महीने के भीतर प्रेक्टिकल लेकर या किसी अन्य प्रकार से उनका फाइनल परीक्षा परिणाम देने की गुहार लगाई है।

इस संबंध में इग्नू अध्ययन केंद्र मंडी के समन्वयक राजकुमार व क्षेत्रीय निदेशक शिमला जोगेंद्र कुमार ने बताया कि मामला उनके ध्यान में है लेकिन संख्या कम होने से हर केंद्र पर प्रैक्टिकल करवाना संभव नहीं है। शीघ्र ही उचित कार्रवाई की जाएगी।

स्क्रैप इंडस्ट्री में अग्निकांड

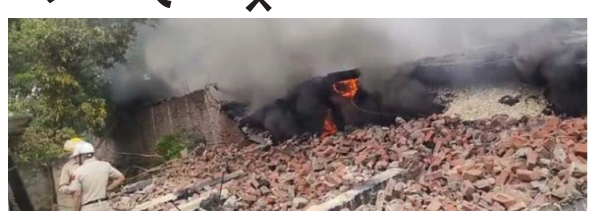

प्रचण्ड समय . मैहतपुर

हिमाचल प्रदेश की सीमा से सटे मैहतपुर इंडस्ट्रियल एरिया के एक स्क्रैप उद्योग में रविवार और सोमवार की मध्य रात्रि भीषण अग्निकांड हो गया। इस अग्निकांड में 2 करोड़ से अधिक का नुकसान होने का अंदाजा लगाया जा रहा है। आग पर काबू पाने के लिए जिला के दमकल विभाग को पड़ोसी राज्य पंजाब के दमकल विभाग की भी मदद लेनी पड़ गई। अग्निकांड इतना भीषण था कि दो मंजिला इमारत भयंकर आग के चलते गिर गई है। हालांकि आग लगने के कारणों का अभी तक खुलासा नहीं हो सका। गनीमत रही कि इस घटना में किसी प्रकार का कोई जानी नुकसान नहीं हुआ। एक तरफ जहां दमकल विभाग आग पर काबू पाने में जुटा है तो वहीं दूसरी तरफ पुलिस विभाग ने भी मौके पर पहुंचकर घटना के संबंध में जांच शुरू कर दी है।

जेकेपीएम मोगड़ा ने जीता ग्रीन पार्क स्टेडियम करयाली क्रिकेट प्रतियोगिता का फाइनल

प्रचण्ड समय . शिमला

हिमालयन यूथ स्पोर्ट्स क्लब सराज शिमला ग्रामीण की ओर से ग्रीन पार्क स्टेडियम करयाली क्रिकेट प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। अंतर जिला क्रिकेट प्रतियोगिता में शिमला, मंडी, सोलन, सिरमौर, किन्नौर, कुल्लू और बिलासपुर की 48 टीमों ने भाग लिया। प्रतियोगिता 6 अप्रैल से शुरू हुई थी। सोमवार को फाइनल मुकाबला जेकेपीएम मोगरा और जेएसएम वारियर्स साल के बीच खेला गया। जेकेपीएम मोगरा ने जेएसएम वारियर्स साल को हराकर फाइनल मैच जीता। प्रतियोगिता के समापन समारोह में हिमाचल प्रदेश राज्य सहकारी बैंक निदेशक व हिमाचल प्रदेश कांग्रेस कमेटी प्रशिक्षण विभाग के अध्यक्ष हरि कृष्ण हिमराल बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित हुए। स्थानीय लोगों ने पारंपरिक तरीके से उनका स्वागत किया। ढोल, नगाड़ो और शहनाई की ध्वनियों और फूलमालाओं के साथ गर्मजोशी से स्वागत किया गया। इस अवसर पर बोलते हुए हिमराल ने युवाओं के व्यक्तित्व के समग्र विकास पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि युवाओं के भविष्य निर्माण के लिए पढ़ाई व कौशल विकास के साथ खेल गतिविधियों में भाग लेने पर जोर दिया। उन्होंने नशे से दूर रहने और इन खेलों का उपयोग एक-दूसरे की मदद करने के लिए करने का संदेश दिया, ताकि हमारे समाज का उत्थान हो सके। हिमराल ने विजेता टीम और उप विजेता टीम को पुरस्कार वितरित किया। प्रतियोगिता में मैन ऑफ द मैच, मैन ऑफ द सीरीज, सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज, सर्वश्रेष्ठ गेंदबाज, सर्वश्रेष्ठ क्षेत्ररक्षक और टूर्नामेंट के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी को भी मुख्य अतिथि द्वारा मंच पर पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के साथ एलआर कौंडल प्रधान ग्राम पंचायत करयाली, नेक चंद वर्मा बीडीसी सदस्य, प्रियंका कश्यप बीडीसी सदस्य, रामानंद शास्त्री, हरि दास, मुंशी राम, जोगिंदर ठाकुर, लक्ष्मी कौंडल, हुक्मी राम शर्मा, चंद्र मोहन, सतीश मेहता, मधु वर्मा, तेज राम शर्मा सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे। मुख्य अतिथि ने क्लब को 10 हजार रुपए व खेल सामान देने की घोषणा की।

न्यूज ब्रीफ..

हरियाणा की नौ लोकसभा सीटो के प्रत्याशी तय कर लेने का कांग्रेस का दावा

प्रचण्ड समय

राजेंद्र सिंह जादौन, चंडीगढ़ . हरियाणा में नौ लोकसभा सीटों पर प्रत्याशियों के चयन का विवाद सुलझाने के लिए कांग्रेस हाईकमान द्वारा बनाई गई उच्चस्तरीय कमेटी भी उलझ गई। एक दिन पहले कई घंटे चली सलमान खुर्शीद और मधुसूदन मिस्त्री के नेतृत्व वाली उच्च स्तरीय कमेटी की बैठक में प्रत्याशियों को लेकर सहमति नहीं बन पाई। हिसार, करनाल और गुरुग्राम लोकसभा सीटों को लेकर पेच फंसा रहा। अंतिम फैसला कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे पर छोड़ दिया गया। फिर हरियाणा कांग्रेस प्रभारी दीपक बाबरिया का बयान आया कि सभी सीटों पर सहमति बन चुकी है और अब केंद्रीय चुनाव समिति की हरियाणा को लेकर कोई बैठक नहीं होगी। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ही अंतिम रूप से टिकटों की घोषणा करेंगे।

कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय संगठन महासचिव केसी वेणुगोपाल के आवास पर नई दिल्ली में हुई बैठक में वरिष्ठ नेता सलमान खुर्शीद, मधुसूदन मिस्त्री, हरियाणा मामलों के प्रभारी दीपक बाबरिया, पूर्व सीएम भूपेंद्र सिंह हुड्डा व प्रदेशाध्यक्ष चौधरी उदयभान मौजूद रहे। शनिवार को हुई केंद्रीय चुनाव समिति की बैठक में जब हरियाणा का विवाद नहीं सुलझा तो इस कमेटी का गठन किया गया था।

बैठक में इस कमेटी के सदस्य कुमारी सैलजा व रणदीप सिंह सुरजेवाला नहीं पहुंचे। बताया जाता है कि सलमान खुर्शीद ने सैलजा और रणदीप से अलग-अलग बात कर टिकटों को लेकर उनकी राय जानी। शनिवार को हुई केंद्रीय चुनाव समिति की बैठक में रोहतक से दीपेंद्र हुड्डा, सिरसा से कुमारी सैलजा और अंबाला से मुलाना के विधायक वरुण चौधरी के नाम पर सहमति बना ली गई थी, बाकी की छह सीटों पर पेच फंसा था। इसी के चलते कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व ने उच्च स्तरीय कमेटी का गठन किया था। I

कांग्रेस के हरियाणा प्रभारी दीपक बाबरिया का कहना है कि टिकटों पर चर्चा करने के लिए हरियाणा की सब कमेटी की बैठक हो चुकी है। सभी नौ लोकसभा सीटों पर बात बन चुकी है। दो-तीन दिन में उम्मीदवारों की सूची जारी कर दी जाएगी।केंद्रीय चुनाव समिति की भी अब कोई बैठक नहीं होगी। सब कमेटी के द्वारा जो निर्णय लिया जाएगा, उसे अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे के सामने रखा जाएगा। उम्मीदवारों की अंतिम सूची अध्यक्ष के ऑफिस से जारी होगी।

प्राइवेट स्कूल एसोसिएशन का आरोप,कनीना दुर्घटना के बाद भी रैली के लिए मांगी स्कूल बसे

प्रचण्ड समय

राजेंद्र सिंह जादौन, चंडीगढ़ . हरियाणा की प्राइवेट स्कूल एसोसिएशन ने आरोप लगाया है कि हाल में कनीना में स्कूल बस दुर्घटना के बाद भी फरीदाबाद मे रैली के लिए स्कूल बसे मंगवाई गई।

प्राईवेट स्कूल एसोसिएशन के अध्यक्ष कुलभूषण शर्मा ने एक चैनल से बातचीत में कहा कि महेन्द्रगढ कनीना की स्कूल बस दुर्घटना दुखदायक थी। इसके लिए ड्राईवर व स्कूल प्रशासन पूरे तौर पर जिम्मेदार है। सरकार घटना के बाद गलत तरीके से कर रही है कार्रवाई।एक साल पुरानी बसों को भी अंबाला से उठाया गया है।इस तरह की कार्रवाई सरकार को नहीं करनी चाहिए।सरकार ने महेन्द्रगढ की दुर्घटना के बाद 14 अप्रैल को फ़रीदाबाद में मंगवाई स्कूलों की बसे। रैली में जाने पर बसों की मशीनरी को नुकसान होता है।

उन्होंने कहा कि हाईकोर्ट के आदेश के बावजूद स्कूलों से बसे मांगी जा रहीं है। दवाब डालकर स्कूलों से बसे मांगी जा रही है।सत्ता में रहने वाली पार्टी से इस एवज कोई खर्च मिलता नही है और ना ही हमें चाहिए। हम चाहते है हमारी बसे ना मांगी जाए ।

पहले वाले बस रैली में ले जाने पर तेल देते थे ये तो वह भी नहीं देते।यदि एसा चलता रहा तो हम अपनी बसों कि चाबी सरकार को थमा देंगे । फिर सरकार अपने स्तर पर व्यवस्था करे। हमारा पैसा सालों से अटका हुआ है जो सरकार पर बकाया है। यदि वह मिले तो हम और अच्छी बसें व इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार कर पाएंगे।

पांगणा में लाहौल मेले का समापन

प्रचण्ड समय . शिमला

हिमाचल प्रदेश की ऐतिहासिक नगरी पांगणा-सुकेत मे एक महीने तक आयोजित लाहौला पर्व का भुट्ठा सौह मेले के साथ समापन हो गया।इस मेले मे पांगणा-चुराग,सुईं-कुफरीधार, कलाशन,मशोग,बही-सरही,जाच्छ काण्ढा सहित अनेक पंचायत वासियो ने भाग लिया।

- आल-पाल लुड्डी पाईए,नाचया हो दक्षा री धीए।

हरा-भरा साओरडे,मेरी लाहौल चली साओरडे।

लाहौल का मतलब है शिव -पार्वती का विवाह और फिर दोनो का नदी मे विसर्जन। लाहौल एक ऐसा पर्व है जिसे छोटी-छोटी लड़कियो के साथ छोटे-छोटे लड़के भी मनाते है।चैत्र मास की संक्राति को सुकेत अधिष्ठात्रि राजराजेश्वरी महामाया पांगणा के मंदिर मे वास्तु के रूप मे एक सुपारी को शुभ मुहूर्त मे स्थापित किया जाता है।फिर इसे फूल अर्पित किए जाते है ।निरंतर एक माह तक लड़किया सूर्योदय से पूर्व घर-घर जाकर लाहौल गीत गाते हुए फूल इकट्ठे कर लहौला को अर्पित करती है।लाहौल विसर्जन से एक सप्ताह पूर्व मिट्टी की शिव पार्वती की मूर्तिया बनाकर उन्हे सुखाकर विभिन्न रंगो से सजाती है।लाहौल विसर्जन से एक दिन पूर्व धार्मिक रीति-रिवाज से शिव पार्वती का विवाह करती है।इसी दिन चुराग पंचायत के अंतर्गत फरास गांव मे स्थित देव थला जी की रथ

यात्रा लाहौल मेले मे शामिल होने के लिए पांगणा पहुंचती है।अगले दिन सुईं-कुफरीधार पंचायत की महामाया बलेश्वरी की रथ यात्रा पांगणा पहुंचती है।दोपहर बाद शिव-पार्वती की मूर्तियो को सजाकर एक टोकरे मे रख फूलो से ढक कर व सिर पर उठाकर शिकारीदेवी की चरणगंगा के तट पर स्थित बाग गांव के पार्वती कुंड के पास पहुंचाते है।इसके बाद देव थला जी की रथ यात्रा लाहौल मेला स्थल भुट्ठा सौह पहुँचती है।दोपहर बाद लगभग दो बजे महामाया पांगणा और महामाया छण्डयारा की रथयात्रा जब पार्वती कुँड के ऊपर पहुंचती है तो "होफरा"वाद्यधुन के बजते ही नाथ संप्रदाय का व्यक्ति शिव पार्वती के फूलो से ढके टोकरे को सिर पर उठाकर कुँड मे छलांग लगाकर इन्हे विसर्जित कर देता है।ऐसे मे लड़कियो और महिलाओ के छलकते आंसुओ को रोक पाना मुश्किल हो जाता है।लाहौल विसर्जन के बाद देव रथ यात्रा मेला स्थल भुट्ठा सौह पहुंचती है।जहां लाहौल के सम्मान मे सायंकाल सात-आठ बजे तक लाहौल मेले का आयोजन होता है।लाहौल पर्तीव की खुशी मे देव रथ "मेड़",रथ नृत्य सभी के आकर्षण का केन्द्र रहता है। श्रद्धालु तीनो देव रथो को अपनी मन्नौतिया अर्पित कर आशीर्वाद प्राप्त करते है।देवरथो के अपनी-अपनी कोठी को लौटने के साथ लाहौल मेले का भी समापन हो गया।सुकेत संस्कृति साहित्य और जन-कल्याण मंच पांगणा-सुकेत के अध्यक्ष डॉक्टर हिमेंद्र बाली "हिम"संस्कृति मर्मज्ञ डॉक्टर जगदीश शर्मा,हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय शिमला के एग्रो इकोनोमिक्स विभाग के सेवानिवृत्त कर्मी खेमराज शर्मा,सेवानिवृत्त सीनियर फार्मासिस्ट जीवानंद शर्मा,सेवानिवृत्त अधीक्षक नरेन्द्र शर्मा,समाज सेवी रविन्द्र गुप्ता और संस्कृति मर्मज्ञ डॉक्टर जगदीश शर्मा का कहना है कि लाहौला पर्व मे अब छोटी-छोटी लडकियो की निरंतर एक माह तक भागेदारी का तो लोप हो गया है साथ ही लाहौला के प्रति श्रद्धा भावना की कमी से ऐतिहासिक नगरी पांगणा-सुकेत की संस्कृति भी नष्ट होती जा रही है।हम समस्त पांगणा-सुकेत-मंडी और हिमाचल वासियो को समय के साथ लुप्त होती समृद्ध संस्कृति का उद्धार करना चाहिए।

भाजपा ने 1500 रुपये रुकवाकर महिलाओं को किया अपमानित : कांग्रेस

प्रचण्ड समय . शिमला

राजस्व एवं बागवानी मंत्री जगत सिंह नेगी और विधानसभा में डिप्टी चीफ व्हिप केवल सिंह पठानिया ने कहा है कि भाजपा ने इंदिरा गांधी प्यारी बहना सुख सम्मान निधि के 1500 रुपये रुकवाकर महिलाओं को अपमानित किया है। भाजपा महिला हितैषी होने का सिर्फ ढोंग रचती है, विपक्षी दल पूरी तरह से महिला शक्ति का विरोधी है। भाजपा चुनावों में वोट लेने के अलावा महिलाओं के लिए कुछ नहीं करती।

नेगी व पठानिया ने कहा कि भाजपा ने चुनाव आयोग के जरिये महिलाओं को 1500 रुपये देने पर जो रोक लगवाई है, अगर वह नहीं हटती है तो जून में सरकार तीन महीने की राशि एक साथ पात्र महिलाओं को देगी। मुख्यमंत्री सुक्खू का बीते दिनों नादौन विधानसभा क्षेत्र के गलोड़ में दिया गया यह बयान स्वागत योग्य है। भाजपा 1500 रुपये का जितना मर्जी विरोध कर ले, यह राशि अप्रैल

2024 से महिलाओं को मिलकर रहेगी। लाहौल व स्पीति जिला की महिलाओं के खाते में योजना की पहली मासिक किश्त पहुंच चुकी है। प्रदेश के अन्य जिलों की महिलाओं को भी पहली अप्रैल 2024 से इस योजना का लाभ मिलना था। सरकार ने कैबिनेट बैठक में योजना को पूरे प्रदेश में लागू करने के लिए 800 करोड़ रुपये का बजट भी मंजूर कर दिया है। योजना को पहली अप्रैल से लागू करने की अधिसूचना तक जारी हो चुकी है। बावजूद इसके भाजपा ने चुनाव आयोग पहुंचकर योजना पर रोक लगवाई।

नेगी व पठानिया ने नेता प्रतिपक्ष जयराम ठाकुर को आड़े हाथों लेते हुए कहा कि जयराम ठाकुर पहले रोजाना यह कहते थे कि महिलाओं को 1500 रुपये देने की गारंटी कांग्रेस सरकार पूरी नहीं कर रही, लेकिन सरकार ने जब यह राशि देने के लिए चुनाव आचार संहिता से पहले फार्म भरवाना शुरू किए तो चुनाव की घोषणा होते ही जयराम योजना पर रोक लगवाने के लिए चुनाव आयोग पहुंच गए। जिससे भाजपा व जयराम ठाकुर का दोगला चेहरा जनता के सामने बेनकाब हो चुका है।

उन्होंने कहा कि महिला शक्ति चुनावों में भाजपा को कड़ा सबक सिखाने के लिए तैयार बैठी है। इंदिरा गांधी प्यारी बहना सुख सम्मान निधि योजना महिलाओं के जीवन मे बड़ा परिवर्तन लाएगी। उन्हें 18000 रुपये सालाना मिलेंगे, जिससे महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने में मदद मिलेगी।

नेगी व पठानिया ने नेता प्रतिपक्ष जयराम ठाकुर को आड़े हाथों लेते हुए कहा कि जयराम ठाकुर पहले रोजाना यह कहते थे कि महिलाओं को 1500 रुपये देने की गारंटी कांग्रेस सरकार पूरी नहीं कर रही, लेकिन सरकार ने जब यह राशि देने के लिए चुनाव आचार संहिता से पहले फार्म भरवाना शुरू किए तो चुनाव की घोषणा होते ही जयराम योजना पर रोक लगवाने के लिए चुनाव आयोग पहुंच गए। जिससे भाजपा व जयराम ठाकुर का दोगला चेहरा जनता के सामने बेनकाब हो चुका है।

उन्होंने कहा कि महिला शक्ति चुनावों में भाजपा को कड़ा सबक सिखाने के लिए तैयार बैठी है। इंदिरा गांधी प्यारी बहना सुख सम्मान निधि योजना महिलाओं के जीवन मे बड़ा परिवर्तन लाएगी। उन्हें 18000 रुपये सालाना मिलेंगे, जिससे महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने में मदद मिलेगी।

केंद्रीय विद्यालय सलोह में रिक्तियों के लिए आवेदन 25 अप्रैल तक

प्रचण्ड समय . ऊना

केन्द्रीय विद्यालय सलोह मे प्रथम से पाँचवी कक्षा तक दो सेक्शन की अनुमति मिल चुकी है |

इस संबंध में जानकारी देते हुए विद्यालय की प्रचार्या नीलम गुलेरिया ने बताया कि शैक्षणिक सत्र 2024 – 25 से हर कक्षा के प्रति सेक्शन मे राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार 32 विद्यार्थी होंगे |

उन्होंने बताया कि केवी सलोह में कक्षा एक में 64, दो में 27, तीन में 24, कक्षा चार में 19 और पाँचवी में 20 रिक्तियाँ हैं।

प्रचार्या ने बताया कि के केंद्रीय विद्यालय में प्रवेश के लिए केन्द्रीय व प्रांतीय सरकार के विभागों व उपक्रमों मे कार्यरत कर्मचारियों के बच्चों को वरीयता दी जाती है ।

इसके अलावा विद्यालय मे प्रवेश शुल्क मात्र 25 रुपए व तिमाही शुल्क कक्षा I&II के लिए 1500 रुपये, III से VIII तक 1800 रुपये है।

केवी सलोह में कक्षा ग्यारवी (विज्ञान व वाणिज्य संकाय) मे 32 रिक्तियां हैं।

अभिभावक कक्षा II से V व XI (विज्ञान व वाणिज्य संकाय) मे उपरोक्त रिक्तियों के लिए अपने बच्चों का पंजीकरण 25 अप्रैल तक विद्यालय कार्यालय मे सुबह 9 बजे से दोपहर 2 बजे तक करवा सकते है |

प्रचार्या ने विद्यालय में दो सेक्शन करने के लिए विद्यालय प्रबंधन समिति के अध्यक्ष एवं उपायुक्त जतिन लाल व केन्द्रीय विद्यालय संगठन का धन्यवाद किया।

पाठकों की मांग पर जल्द ही देहरादून में पढ़ने को मिलेगा आपका अपना अखबार प्रचण्ड समय

थोड़े समय में ही पाठकों के दिल में बनाई जगह

आपके विश्वास और सहयोग से ही हम यहां तक पहुंच पाए

प्रचण्ड समय

को अखबार के लिए प्रशिक्षु पत्रकारों

और पोर्टल के लिए प्रशिक्षु रिपोर्टरों की शिमला में जरूरत है।

संपर्क करें-70180-86211

अच्छा साहित्य समाज निर्माण एवं स्मृतियों में ताजा रहता है डॉ रत्तू की साहित्य पर समीक्षात्मक टिप्पणियां!

इन दिनों साहित्य

प्रो.(डॉ) कृष्ण कुमार रतू

हिंदी पंजाबी के सुपरिचित लेखक एवं मीडिया विशेषज्ञ

इन दिनों साहित्य के लिए समाज एवं पाठक के पास समय और स्पेस नहीं बचा है परंतु फिर भी मेरा मानना है कि अच्छा साहित्य दुनिया के हर कालखंड में हर समय में पढ़ा जाता रहा है तथा सुरक्षित रहा है।

इन दिनों समय बदल गया है तथा इस बदलते हुए समय में जिस तरह की साहित्यिक रचनात्मकता की पहचान बन गई है उसमें से कोई चीज आपको प्रभावित कर जाए अर्थात आपको अच्छी लगे तो ऐसे साहित्य की वांनगी का जिक्र करना बनता है ताकि और पाठक भी उसको पढ़कर लाभ उठा सके।

इन दिनों मेरे पढ़ने की दुनिया में हमारे मित्र और हिंदी के कवि श्री अवधेश कुमार सिंह की पंजाबी में प्रकाशित पुस्तक एहसास की दुनिया उनकी चुनी हुई कविताओं का संग्रह है जिसे गुरचरण कौर कोचर ने अनुवाद किया है।

इसमें अवधेश सिंह की वह कविताएं शामिल है जो मन को छू लेती है हालांकि मैं उनको जानता हूं तथा उनके साहित्य को पिछले दो दशकों से मैं पढ़ा है परंतु पंजाबी में उनकी यह किताब सचमुच उनकी एक नई दुनिया को हमारे सामने प्रस्तुत करती है जिसमें वह मृत्यु के तांडव अर्थात नाच और शब्दों की सोच को पंख लगा दो जैसी बातें करतें है।

उनकी कविताओं में टिहरी बस्ती किट के लोग आज के संदर्भ की बातें करते हैं और यह कविताएं सचमुच अद्भुत है तथा पाठक को प्रभावित करती है ।

मैं उन्हें इस संग्रह के पंजाबी भाषा में आने पर बधाई प्रेषित करता हूं ।

वह एक बहू आयामी लेखक है तथा इसकी एक मिसाल यह है कि इसी साथ उन्होंने आज के चर्चित विषय आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर एक पुस्तक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस मौलिकता भी लिखी है ,जिसे ए आर पब्लिकेशन नई दिल्ली ने प्रकाशित किया है परंतु यह किताब इसलिए अभी महत्वपूर्ण है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर बहुत बातें इन दिनों हो रही है तथा कोई मौलिक सृजन सामने नहीं आया है ।

इस किताब में लेखक का मानना है कि यह किताब उनके उन सूचना प्रौद्योगी के अनुभवों की है जिसमें उन्होंने महसूस किया कि यह हमारी दुनिया को सकारात्मक तरीके से बदल के बदलने की क्षमता रखती है इस पुस्तक में वह कई गंभीर तथा एआई के संभावित ख़तरों से बचने की उपकरणों का उपयोग कैसे किया जा सकता है उनके नाम नियम तथा मानक क्या होंगे उसे पर भी बात करते हैं ।

पिछले 50 वर्षों से प्रकाशित पत्रिका अणुव्रत का 75 वर्ष अणुव्रत के सफर का पहला पन्ना

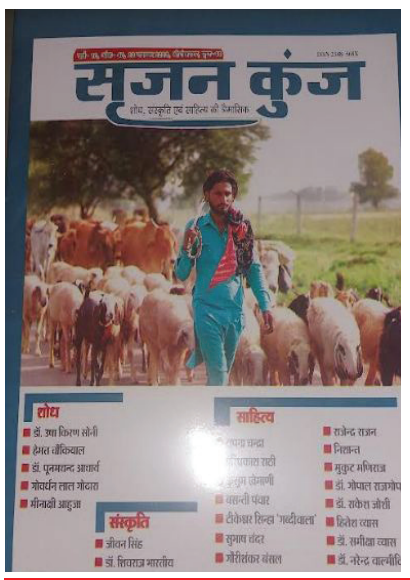

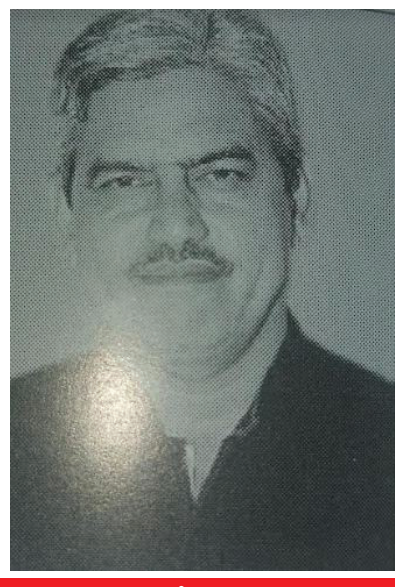

साहित्य संस्कृति की पत्रिका सृजन कुंज का पहला पन्ना एवं संपादक डॉक्टर के के आशु

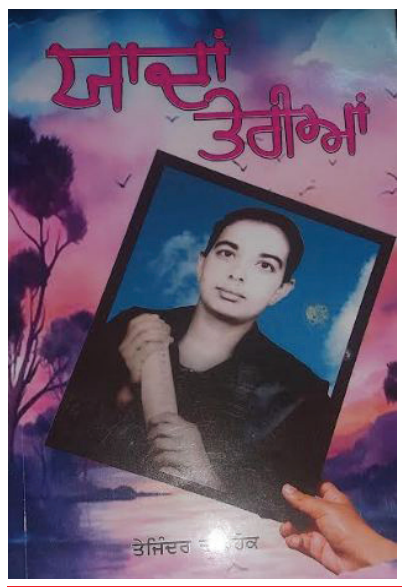

यादां तेरियां पुस्तक के लेखक श्री राजेंद्र चंडोक बरनाला का टाइटल पुस्तक यादन तेरियां का सर वर्क

असल में इस किताब में उन सभी बिंदुओं को स्पष्ट किया गया है जिनमें मान्यता तक मशीन के बीच के अंतर को खत्म करने के प्रयास को कितना बनावटी संदेश तथा डरावना बना दिया गया है । आगामी वर्षों में जब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का और भी बोलबाला हो जाएगा उसमें वरिष्ठ कवि लेखक स्तंभकार तथा सूचना प्रोद्योगिकी की जानकारी पर अवधेश सिंह जी का यह मानक ग्रंथ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस सचमुच उन शोधार्थियों तथा विद्यार्थियों के लिए खोज के लिए अद्भुत ज्ञान का भंडार होगा ।

यह समय ही बताएगा किंतु किताब अच्छी प्रकाशित हुई है तथा पढ़ने योग्य है। मैं इस पर भी अपने मित्र अवधेश सिंह जी को बधाई प्रेषित करता हूं कि आने वाले दिनों में भी वह इस तरह की किताबों को लिखते रहे जिसकी समाज को अति आवश्यकता है ।

मेरी पढ़ी हुई इस सप्ताह की अन्य किताबों में पंजाबी के लेखक श्री राजेंद्र चंडोक की किताब है ,यादां तेरियां।

यह अपनी तरह की किताब है जिसको उन्होंने अपनी मरहूम पत्नी को यादों के तौर पर प्रस्तुत किया है।

इसमें उनकी शख्सियत के बारे में रिश्तेदारों से लेकर अन्य दोस्तों लगातार मिलने वालों की प्रतिक्रिया तथा उनके बारे में उन तस्वीरों को समावेश किया गया है जिससे उनकी से स्मृतियों में याददाश्त बनी रहे ।

श्री तेजेंद्र चांडोक एक तेज तर्रार तथा समझदारी के साथ लिखने वाले लेखक हैं हालांकि वह पुलिस पोस्ट पर भी रहे हैं परंतु एहसास की जिस अभिव्यक्ति को उन्होंने इस पुस्तक के द्वारा प्रस्तुत किया है वह अद्भुत है ।

किसी को याद करने का किसी अपने को अपनी सहयात्री को याद करने का यह उनका तरीका मां को निभाते हैं इन्हीं से स्मृतियों में हम जिंदा रहते हैं ।

श्री राजेंद्र चंडोक की इन यादां तेरियां पुस्तक में हम भी उनको श्रद्धांजलि देते हुए उनकी यादों में इस किताब को सुरक्षित रखने तथा पढ़ने की सिफारिश करते हैं क्योंकि यह संवेदनाओं का योग है एवं एक आदमी अपनी संवेदनाओं को कैसे याद रख सकता है यह इस पुस्तक में देखा जा सकता है ।

प्रचण्ड समय

मेरे सामने इस समय जिन हिंदी की पत्रिकाओं का बोलबाला है उसमें एक त्रैमासिक पत्र का सृजन कुंज जो राजस्थान के सिदूर गश्रीगंगानगर जिले से पिछले 10 वर्षों से निरंतर प्रकाशित हो रही है ।

यह उसके संपादक लेखक तथा कहानीकार के साथ-साथ व्यंगकार श्री डॉक्टर कृष्ण कुमार आशु की मेहनत का फल है कि वह इस पत्रिका को निरंतरता के साथ प्रकाशित कर रहे हैं ।

इसमें शोध संस्कृति और साहित्य की बात होती है इसके नए अंक में शोध संस्कृति के साथ-साथ भावपूर्ण कविताएं तथा समीक्षा भी प्रस्तुत की गई है ।

इस पत्रिका का सबसे बड़ा पहलू यह है कि इसमें भाषा के तौर पर शोधार्थियों को तथा पूरे देश के उन हिंदी लेखकों को अपने साथ जोड़ा है जो आज चर्चित नाम है ।

वह इसके लिए डॉक्टर आशु की मेहनत तथा उनकी पूरी टीम को साधुवाद कि वह इस तरह के छोटे से शहर में रहकर भी इतना बड़ा कार्य कर रहे हैं।

यह उन दोस्तों का हिंदी साहित्य के लिए किया गया योगदान वहां है कि भाषा जिंदा रहे और साहित्य भी जिंदा रहे ।

इस अवसर पर मैं इसके संपादक डॉक्टर कृष्ण कुमार आशु को मुबारकबाद देता हूं कि वह आने वाले दिनों में इसे और भी निरंतरता के साथ प्रकाशित करते रहे और यह हिंदी पाठकों तक एक नया भावनात्मक संदेश लेकर पहुंचती रहे ।

एक अन्य पत्रिका जो पिछले 50 वर्षों से हिंदी साहित्य में एक खास सोच को लेकर निकल रही है वह है अणुव्रत जो अहिंसक नैतिक चेतना का प्रबल प्रतिनिधित्व करती है ।

कभी आचार्य महाप्रज्ञ तथा आचार्य तुलसी जी के नेतृत्व में अणुव्रत सारे देश में घूमता था । उसके 75 वर्ष पूरे होने पर एक 500 पुष्ट का विशेष ग्रंथ नुमा पत्रिका का अंक प्रकाशित किया गया है अमृत आंदोलन अनुव्रत अमृत विशेष अंक ।

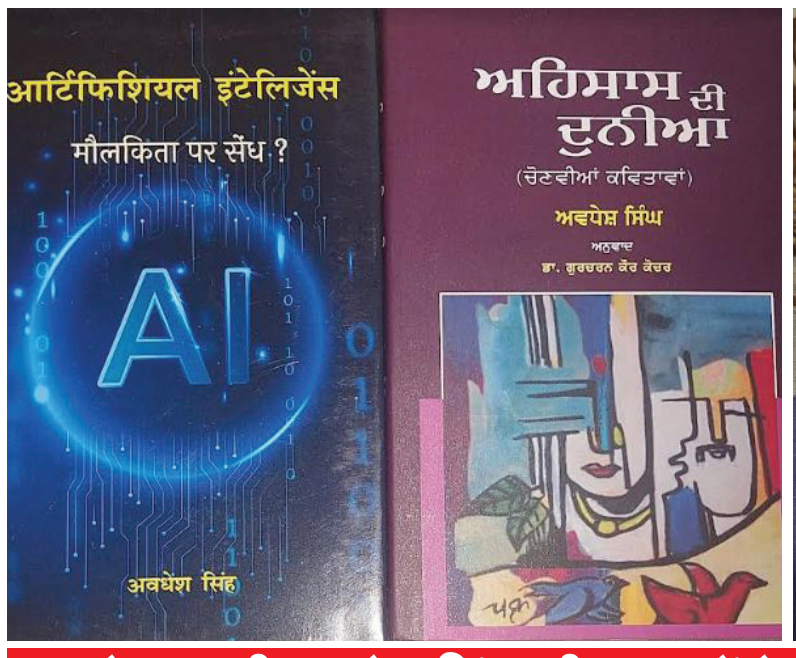

लेखक श्री अवधेश सिंह की पुस्तकों के सबक तथा फोटो

इसके संपादक श्री संचय जैन एवं निगरान अध्यक्ष श्री अविनाश नाहर हैं जिनकी मेहनत से इतनी रंगदार भव्य प्रकाशित हुई है। पत्रकारिता में पत्रिका का इसके डिजाइन तथा इसमें प्रस्तुत मैटर से तथा साहित्य संस्कृति के साथ-साथ अणुव्रत की 75 साल की यात्रा को समर्पित यह ग्रंथ नुमा प्रस्तुति मन को छू लेती है ।

इसमें आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ जी तथा महा श्रमण जी के आलेखों को प्रकाशित किया गया है तथा इसके साथ-साथ ही हिंदी के वरिष्ठ लेखकों के साथ-साथ उन लेखकों को भी समाहित किया गया है जिन्होंने अणुव्रत के साथ-साथ अपना सफर भी तय किया है इसमें राजस्थान पत्रिका के संपादक श्री गुलाब कोठारी, श्री सोहनलाल गांधी तथा डॉक्टर कृष्ण कुमार रत्तू से लेकर अन्य लेखक भी शामिल है जिन्होंने समय समय पर अणुव्रत के साथ कार्य किया है।

हिंदी साहित्य के लिए ऐसी पत्रिकाओं की एक खास पहचान रही है तथा इस पहचान के अंतर्गत यह पत्रिका आज एक पल इस अर्थ में भी करती है कि अणुव्रत जैसा आंदोलन भारतीय समाज को बदल सकता है क्योंकि यह छोटे-छोटे प्रयोग का आंदोलन है। जिसे शांति सुधार तथा आपसी भाईचारे के लिए आचार्य महाप्रज्ञ जी की शख्सियत के साथ जुड़कर एक नया रास्ता अहिंसा यात्रा का तय किया था।

देश के हर कोने में अहिंसा यात्रा की धवल सेना ने जिस तरह से शांति का मार्च किया है वह अद्भुत है और एक 75 वर्षों का पूरा का पूरा विवरण इस पत्रिका के रंगदार् पन्नों पर हुआ है जिसके लिए इसके अध्यक्ष श्री अविनाश नाहर तथा श्री संचय जैन संपादक के साथ पूरी टीम बधाई की पात्र है ।

हिंदी साहित्य में इस तरह की पत्रिकाओं का सुरक्षित रहना अति अनिवार्य है ताकि अलग-अलग संप्रदायों में क्या हो रहा है तथा हिंदी के नए आंदोलन जो समाज को प्रभावित करते हैं उनकी गुणवत्ता बनी रहे।

इस अद्भुत अंक पर मैं उनको बधाई प्रेषित करता हूं हालांकि मैं भी इस आंदोलन के साथ पिछले 35 वर्ष से जुड़ा हुआ हूं परंतु अणुव्रत आंदोलन पर यह अमृत विशेष अंक अपनी पहचान आप रखता है तथा इसका हिंदी साहित्य में स्वागत होना ही चाहिए ।

यह एक अद्भुत सुरक्षित रहने वाली पत्रिका है जो हमें सिखाती है कि जिंदगी में अहिंसा के साथ अणुव्रत की फिलासफी के साथ जिया जा सकता है।

इस लेख के लेखक प्रसिद्ध साहित्यकार एवं मीडिया विशेषज्ञ हैं उन्हें इस लेख पर आप अपनी प्रतिक्रिया 94787 30156 पर दे सकते हैं।

छोटी छोटी बातों में बंटी कांग्रेस

कमलेश भारतीय

गाने के बोल तो हैं कि छोटी छोटी बातों में बंट गया संसार, कांग्रेस पर बिल्कुल फिट बैठते हैं-छोटी छोटी बातों में बंटी है यह कांग्रेस ! ऊपर से लेकर नीचे तक बंटवारा ही बंटवारा, गुटबाजी ही गुटबाजी ! अभी नवरात्रे भी खत्म होने की ओर आये लेकिन कांग्रेस लोकसभा चुनाव के संभावित प्रत्याशियों पर बस मंथन ही किये जा रही है। भाजपा या दूसरे दलों के घोषित प्रत्याशी फील्ड में उतर चुके हैं और जोरों से प्रचार कर रहे हैं जबकि कांग्रेस का एक दूसरे से सिर जोड़कर मंथन ही चल रहा है । नवरात्रों की शक्ति भी बेकार जा रही है ।

वैसे भी जिन दिनों राहुल गाँधी भारत जोड़ो यात्रा पर निकले हरियाणा आये थे, तब विपक्षी नेताओं ने यही कहा था कि पहले कांग्रेस जोड़ो यात्रा निकालिये राहुल बाबा, फिर भारत जोड़ने निकलना ! वैसे भारत तो जुड़ा ही हुआ है, आप अपनी कांग्रेस को जोड़ने का काम करो । यही क्यों, इस बार जब न्याय यात्रा शुरू की, तब भी पहले दिन से लेकर कांग्रेस से भाजपा मे जाने की यात्रा बराबर चलती रही । मुम्बई पहुंचने तक कितने कांग्रेस नेता भगवा रंग में रंग में रंगे जा चुके थे ! इस तरह कांग्रेस के भीतर जो दीमक लगी है, वह इसको लगातार खोखला किये जा रही है । वह कांग्रेस को खाये जात है । गुटबाजी चरम पर है, जिसके चलते अभी तक हरियाणा, पंजाब और हिमाचल की लोकसभा सीटों पर सारे प्रत्याशियों की घोषणा नहीं हो पाई । हरियाणा में तो एक की भी घोषणा नहीं हुई जबकि हिमाचल में तीन, पंजाब में छह की घोषणा तो हुई । हरियाणा ही सबसे ज्यादा गुटबाजी में फंसा लगता है और यहां काटा निकालने का बड़ा रिवाज है। जींद उपचुनाव में यही बात भाजपा नेता प्रो रामबिलास शर्मा ने कही थी कि कांग्रेस नेता यहां किसी की मदद करने नहीं आये बल्कि कांटा निकालने आये हैं और सचमुच रणदीप सुरजेवाला का कांटा निकाल दिया और उन्हें अपनी राजनीति राजस्थान में राज्यसभा में जाकर बचानी पड़ी ! ऐसा लगता है कि अभी लोकसभा प्रत्याशियों के चयन में भी कांटे निकालने की कवायद चल रही होगी !

सबसे मजेदार बात कही कभी कांग्रेस के छह साल अध्यक्ष रहे और अब सिरसा से भाजपा प्रत्याशी अशोक तंवर ने कि मैंने चार सम्पत्तियां बेच कर कांग्रेस को सींचा लेकिन मुझे काम नहीं करने दिया गया । इसी तरह सुश्री सैलजा का हरियाणा प्रदेश अध्यक्ष के रूप में कार्यकाल ही पूरा नहीं होने दिया गया । उन्हें बीच में ही अपना पद छोड़ना पड़ा, जो कसक अब भी उनके दिल में है और यही कसक गुटबाजी को बढ़ावा देती है। इसी गुटबाजी के चलते न तो सैलजा प्रदेश कांग्रेस का संगठन बना पाईं और न ही अभी तक नये प्रदेशाध्यक्ष उदयभान संगठन बना पाये हैं, बस, अपने अपने संगठन यानी गुटबाजी हो रही है ! बिना संगठन के ही कांग्रेस चुनाव में जायेगी । इस गुटबाजी और कांटा निकालने और कांटा चुभोने ने कांग्रेस को खोखला कर रखा है । इसका कोई इलाज भी नहीं ढूंढा जा रहा । बेशक इसी गुटबाजी के चलते कभी चौ बीरेंद्र सिंह कांग्रेस छोड़ गये थे। वे अपने बेटे के साथ कांग्रेस में घर वापसी कर चुके हैं लेकिन अभी तक बृजेंद्र सिंह को भी इंतज़ार है लोकसभा क्षेत्र का, जहां से उन्हें मैदान में उतारा जायेगा ! सुश्री सैलजा विधानसभा चुनाव लड़ने की इच्छा जाहिर करती रहीं लेकिन लगता है कि उन्हें लोकसभा में ही उतरना पड़ेगा । जैसा हाईकमान चाहे !

फिर भी छोटी छोटी बातों में बंट हुई दिखती है कांग्रेस !

एक ईंट क्या गिरी मेरे मकान की
लोगों ने आने जाने का रास्ता बना लिया !

-पूर्व उपाध्यक्ष, हरियाणा ग्रंथ अकादमी।

9416047075

ईरान ने इसराइल पर हमला क्यों किया?

सीरिया की राजधानी दमिश्क में अपने वाणिज्य दूतावास पर हुए घातक हमले के बाद ईरान ने इसराइल मिसाइल और ड्रोन से हमले किए हैं।

इसराइल ने अब तक ये नहीं कहा है कि उसी ने दमिश्क में ईरानी कंसुलेट पर हमला किया था, पर माना जा रहा है कि ये उसी ने किया है।

ये पहली बार है जब ईरान ने इसराइल पर सीधा हमला किया है।

अतीत में ईरान और इसराइल एक दूसरे के विरुद्ध अप्रत्यक्ष रूप से हमले करते रहे हैं। इन हमलों में एक दूसरे के ठिकानें को निशाना बनाना शामिल है। दोनों कभी ऐसे हमलों की ज़िम्मेदारी स्वीकार नहीं करते थे।

दोनों देशों के बीच ये छद्म युद्ध ग़ज़ा-इसराइल युद्ध के बाद काफ़ी व्यापक हो गया है।

इसराइल और ईरान क्यों हैं दुश्मन

दोनों देश 1979 तक एक दूसरे के सहयोगी हुआ करते थे। इसी साल ईरान में इस्लामी क्रांति हुई और देश में एक ऐसी सरकार आई जो विचारधारा के स्तर पर इसराइल की घोर विरोधी थी।

अब ईरान इसराइल के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करता और उसके पूरी तरह से ख़ात्मे की वक़ालत करता है।

ईरान के सुप्रीम लीडर रहे आयातुल्लाह अली ख़ामेनेई कहते रहे हैं कि इसराइल 'कैंसर का ट्यूमर' है और उसे बेशक़ 'जड़ों से उखाड़ फ़ेंका जाएगा और बर्बाद कर दिया जाएगा।'

इसराइल भी कहता है कि ईरान उसके अस्तित्व के लिए ख़तरा है। इसराइल कहता है कि ईरान फ़लस्तीनी हथियारबंद समूहों और लेबनान में शिया गुट हिज़बुल्लाह को फंड करता है।

इसराइल का आरोप है कि ईरान गुप्त रूप से परमाणु हथियार बना रहा है। हालांकि ईरान न्यूक्लियर बम बनाने से बिल्कुल इंकार करता है।

कंसुलेट पर हमले के बाद ईरान का वार

ईरान ने साफ़ कहा है कि इसराइल पर उसका हमला एक अप्रैल को दमिश्क में उसके कंसुलेट पर हुए हवाई हमले का जवाब है। उस हमले में कई वरिष्ठ ईरानी कमांडर मारे गए थे।

ईरान इन हमलों के लिए इसराइल को ज़िम्मेदार मानता है और वो कंसुलेट पर हमले को अपनी संप्रभुता का उल्लंघन बताता है।

इसराइल ने सार्वजनिक रूप से ये नहीं कहा है कि ये हमले उसने किए हैं लेकिन ऐसी मान्यता है कि दमिश्क हमले के पीछे इसराइल ही था।

दमिश्क में हुए हवाई हमले में 13 लोग मारे गए थे। मरने वालों में ईरान की क़ुद्स फोर्स के ब्रिगेडियर जनरल मोहम्मद रेज़ा ज़ाहेदी भी शामिल थे। क़ुद्स फ़ोर्स ईरान के इलीट सैन्य दस्ते रिपब्लिकन गार्ड्स की ईरान के बाहर काम करने वाली फ़ोर्स है।

ज़ाहेदी लेबनान के शिया गुट हिज़बुल्लाह का मार्गदर्शन करते थे।

दमिश्क में ईरान के ठिकाने पर हमला उस पैटर्न का हिस्सा लगता है जिसके तहत कई ईरानी ठिकानों को निशाना बनाया गया था। माना जाता है कि इन सबके पीछे इसराइल का हाथ था।

हाल के महीनों में ईरान के रिपब्लिकन गार्डस के कई बड़े कमांडर सीरिया में मारे गए हैं।

रिपब्लिकन गार्ड्स सीरिया के रास्ते ही हिज़बुल्लाह के लिए हथियार और सैन्य साज़ो सामान भेजते हैं। इनमें मिसाइलें और रॉकेट तक शामिल हैं। इसराइल इन हथियारों की आपूर्ति को रोकने की कोशिश में है।

साथ ही वो सीरिया में ईरान की सैन्य ताक़त को मज़बूत होता भी नहीं देखना चाहता।

ईरान के सहयोगी कौन हैं?

मध्य-पूर्व में अमेरिका और इसराइल के हितों को चुनौती देने के लिए ईरान ने सहयोगियों का एक नेटवर्क बना लिया है। ईरान किसी न किसी स्तर पर इन सहयोगियों का मदद करता रहता है।

सीरिया ईरान का सबसे बड़ा सहयोगी है। रूस की मदद से ईरान ने सीरिया में बशर अल-असद की सरकार की मदद की है। एक दशक से चल रहे गृह युद्ध के बावजूद बशर अल-असद सीरिया के राष्ट्रपति बने हुए हैं।

लेबनान के सबसे ताक़तवर हथियारबंद गुट हिज़बुल्लाह पर ईरान का हाथ है। ग़ज़ा और इसराइल के बीच छिड़े संघर्ष के बाद हर दिन हिज़बुल्लाह इसराइल के ख़िलाफ़ गोलियां-बम चला रहा है।

लेबनान और इसराइल के सरहदी इलाक़ों से हज़ारों लोगों को अपना घर छोड़कर सुरक्षित जगहों पर जाना पड़ा है।

ईरान अपने पड़ोसी देश इराक़ में कई शिया मिलिशिया समूहों का साथ देता है जो अमेरिका को निशाना बनाते हैं। ये गुट इराक़, सीरिया और जॉर्डन में अमेरिकी ठिकानों पर रॉकेट दागते रहते हैं

जॉर्डन में एक मिलिट्री ठिकाने पर ऐसे ही हमले में तीन अमेरिकी सैनिक मारे गए थे। इसके बाद अमेरिका ने जवाबी कार्रवाई की थी।

- साभार, बीबीसी

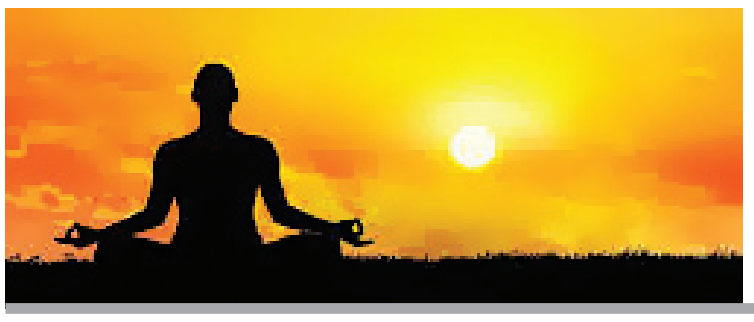

सनातन

prachandsamay.com

प्रचण्ड समय

5

शिमला, मंगलवार, 16 अप्रैल, 2024

क्यों किया जाता है कन्या पूजन? जानें महत्व और इससे जुड़ी पौराणिक कथा

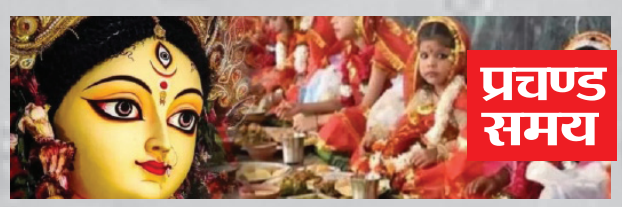

चैत्र नवरात्रि हो या शारदीय दोनों में ही कन्या पूजन का विशेष महत्व है। नवरात्रि के दौरान, व्रत रखने वाले भक्त अष्टमी या नवमी तिथि को कन्या पूजन करते हैं और कन्याओं को भोजन करवाते हैं। कन्या पूजन की ये परंपरा सदियों से चली आ रही है, लेकिन इसकी शुरुआत कैसे हुई और कन्या पूजन का महत्व क्या है, इसके बारे में आइए विस्तार से जानते हैं।

नवरात्रि कन्या पूजन 2024

साल 2024 में चैत्र नवरात्रि की शुरुआत 9 अप्रैल से हुई थी और चैत्र नवरात्रि का समापन 17 अप्रैल को होगा। यानि 16 अप्रैल को अष्टमी तिथि होगी और 17 अप्रैल को नवमी तिथि। भारत के अलग-अलग राज्यों में कन्या पूजन की तिथि भी अलग-अलग है, कुछ भक्त अष्टमी तो कुछ नवमी के दिन कन्या पूजन करते हैं।

नवरात्रि कन्या पूजन से जुड़ी पौराणिक कथा

पौराणिक शास्त्रों के अनुसार, इंद्र देव ने ब्रह्मा जी के कहने पर कन्या पूजन किया था। दरअसल, इंद्रदेव देवी मां को प्रसन्न करना चाहते थे। अपनी इच्छा को लेकर इंद्रदेव ब्रह्मा जी के पास पहुंचे और उन्हें माता दुर्गा को प्रसन्न करने का उपाय पूछा। ब्रह्मा जी ने इंद्रदेव से कहा कि, देवी माता को प्रसन्न करने के लिए आपको कन्याओं का पूजन करना चाहिए और उन्हें भोजन कराना चाहिए। ब्रहा जी की सलाह के बाद इंद्रदेव ने माता की विधि-विधान से पूजा करने के बाद कुंवारी कन्याओं का पूजन किया और उन्हें भोजन करवाया। इंद्रदेव के सेवा भाव को देखकर माता प्रसन्न हुईं और उन्हें आशीर्वाद दिया। ऐसा माना जाता है कि, तभी से कन्या पूजन की परंपरा शुरू हुई।

कन्या पूजन का महत्व

नवरात्रि में माता दुर्गा के नौ रूपों की पूजा होती है। पूजन में 9 कन्याओं को ही बुलाने की परंपरा है जिन्हें माता दुर्गा के नौ रूपों का प्रतीक माना जाता है, इसके साथ ही एक बटुक भी कन्याओं के साथ होना चाहिए जो भैरव का रूप माना जाता है। जो भी भक्त विधि-विधान से माता की पूजा आराधना करते हैं और कुमारी कन्याओं का पूजन करते हैं उन्हें माता का आशीर्वाद प्राप्त होता है। कन्या पूजन करने से माता की कृपा आप पर बनी रहती है और घर-परिवार में सुख-समृद्धि रहती है। ऐसा करना आपके धार्मिक और आध्यात्मिक ज्ञान को भी बढ़ाता है। आइए अब जानते हैं कि कन्या पूजन के दौरान किन बातों का आपको ख्याल रखना चाहिए।

ऐसे करें कन्या पूजन

कन्या पूजन के दौरान आपको 10 साल से अधिक की कन्याओं को नहीं बुलाना चाहिए। कन्याओं को भोजन करवाने से पहले उनके पैर धोएं, इसके बाद उन्हें स्वच्छ स्थान पर बैठाएं। कन्याओं के पूजन से पहले आपको माता रानी को भोग लगा लेना चाहिए। कन्या पूजन के बाद कन्याओं को हलवा, पूरी और चने खिलाने चाहिए। इसके बाद कन्याओं के हाथ धुलवाकर आपको उन्हें आसन पर बिठाना चाहिए और उन्हें दक्षिणा देनी चाहिए।

बाल गंगाधर तिलक के गणेश उत्सव से क्यों डरने लगे थे अंग्रेज... पढ़ें दिलचस्प किस्से

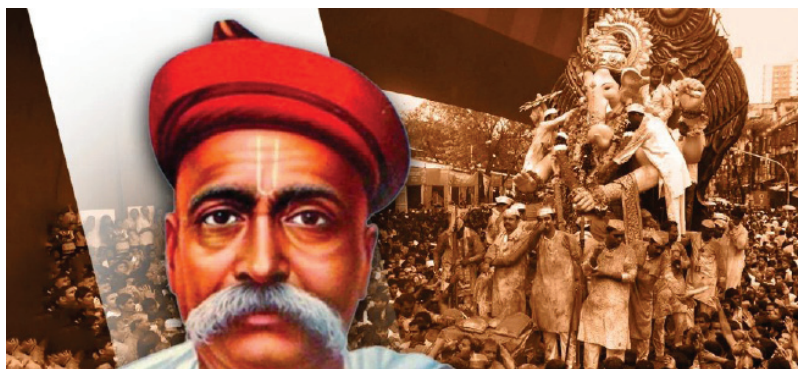

अंग्रेजों से भारत को मुक्त कराने के लिए स्वाधीनता सेनानियों ने अपनी ओर से हरसंभव कोशिश की। इन्हीं सेनानियों में एक बड़ा नाम है बाल गंगाधर तिलक का, जिन्हें हम लोकमान्य तिलक के रूप में भी जानते हैं। लोकमान्य यानी सब जिन्हें मानते हों या जिसे लोक यानी आम जनता की मान्यता मिली हो। ऐसा हो भी क्यों नहीं, देश की आजादी की लड़ाई को आम जन से जोड़ने के लिए लोकमान्य तिलक काम ही ऐसे करते थे।

कभी उन्होंने गणपति महोत्सव की शुरुआत कर आम लोगों को स्वाधीनता संग्राम से जोड़ा तो कभी शिवाजी उत्सव के जरिए जोड़ा। वह मुहर्रम के जुलूस में भी शामिल होते थे, जिससे लोगों को आजादी का महत्व समझा कर अंग्रेजों के खिलाफ खड़े कर सकें। साल 1895 में 15 अप्रैल को शुरू हुए शिवाजी उत्सव की वर्षगांठ पर आइए जान लेते हैं लोकमान्य तिलक से जुड़े किस्से।

रायगढ़ किले में की थी शिवाजी उत्सव की शुरुआत

बाल गंगाधर तिलक देश की आजादी की लड़ाई लड़ रहे ऐसे राष्ट्रवादी थे, जो कांग्रेस के सदस्य तो थे पर कई काम अपने मन से करते थे। इसमें उन्हें जनता का भरपूर समर्थन भी मिलता था। इसी तरह से एक शुरुआत थी शिवाजी उत्सव की। 15 अप्रैल 1895 को लोकमान्य तिलक ने रायगढ़ किले में शिवाजी उत्सव की शुरुआत की थी। रायगढ़ किले में ही कभी शिवाजी का राज्याभिषेक हुआ था और उन्होंने छत्रपति की उपाधि धारण की थी। रायगढ़ की शिवाजी के समय में मराठा साम्राज्य की राजधानी था। ऐसे में महाराष्ट्र के लोगों का शिवाजी और रायगढ़ से अलग ही लगाव था और आज भी है।

क्या है ईरान के हमले रोकने वाला इजराइल का एरो डिफेंस सिस्टम?

शिवाजी के जरिए लोगों को किया एकजुट

भारतीय राष्ट्रवाद के प्रबल समर्थक लोकमान्य तिलक ने महसूस किया कि शिवाजी की विरासत को अगर उत्सव के रूप में मनाया जाए तो भारत के लोगों को अंग्रेजी शासन के खिलाफ एकजुट करने में सफलता मिलेगी। वैसे भी लोकमान्य तिलक शिवाजी को साहस, नेतृत्व औऱ देशभक्ति की मिसाल के रूप में देखते थे और इन गुणों की अंग्रेजी शासन के खिलाफ लड़ाई में बहुत जरूरत थी। इसके अलावा तिलक का मानना था कि शिवाजी के नाम पर उत्सव के जरिए भारत के लोगों में गर्व और एकता की भावना भरी जा सकती है, जो जाति, धर्म और भाषा के आधार पर बंटे हुए थे। इसलिए उन्होंने शिवाजी उत्सव की शुरुआत कर इसका इस्तेमाल लोगों तक भारतीय राष्ट्रवाद का संदेश पहुंचाने और अंग्रेजों के खिलाफ उन्हें खड़ा करने के लिए किया।

देश की सीमा से निकलकर विदेश तक पहुंचा उत्सव

धीरे-धीरे शिवाजी उत्सव काफी प्रसिद्ध होता गया और एक सालाना आयोजन बन गया। देखते ही देखते यह पूरे महाराष्ट्र के साथ भारत के कई और हिस्सों में भी मनाया जाने लगा। एक वक्त ऐसा भी आया, जब यह उत्सव देश की सीमा तोड़कर विदेश तक पहुंच गया और साल 1905 तक यह उत्सव जापान में भी मनाया जाने लगा। इसके जरिए लोगों में राष्ट्रवाद की भावना जाग्रत होने लगी, जिसने अंग्रेजों की नींद उड़ानी शुरू कर दी।

गणेश उत्सव से भरी देशभक्ति की भावना

शिवाजी उत्सव से पहले लोगों को देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत करने के लिए बाल गंगाधर तिलक गणेश उत्सव की शुरुआत कर चुके थे। हर साल गणेश चतुर्थी पर देश-दुनिया में मनाए जाने वाले गणेशोत्सव को घरों की दहलीज से निकालकर सार्वजनिक मंच पर स्थापित करने का श्रेय तिलक को ही जाता है। इस उत्सव की शुरुआत की भी रोचक कहानी है।

इस तरह से हुई थी गणेशोत्सव की शुरुआत

बताया जाता है कि साल 1892 में लोकमान्य तिलक बॉम्बे से पूना (अब पुणे) लौट रहे थे। ट्रेन में उनसे एक संन्यासी मिला। उसने तिलक से कहा कि हमारे राष्ट्र की रीढ़ धर्म है। इसके बाद तिलक के मन में कौंधने लगा कि लोगों की इस धर्मपरायणता का इस्तेमाल राष्ट्रभक्ति पैदा करने के लिए किया जा सकता है। तब महाराष्ट्र के घरों में गणेश चतुर्थी व्यक्तिगत रूप से धूमधाम से मनाई जाती थी।

तिलक ने सोचा कि क्यों न जाति-पात में बंटे लोगों को एक करने के लिए गणपति का सहारा लिया जाए और उन्होंने 1893 में केशवजी नाइक चॉल सार्वजनिक गणेशोत्सव मंडल की नींव रख दी। इस मंडल के जरिए पहली बार सार्वजनिक रूप से गजानन की बड़ी प्रतिमा स्थापित कर महोत्सव शुरू हुआ। महोत्सव के मंच पर तरह-तरह के सांस्कृतिक कार्यक्रम होते तो देशप्रेम के भाषण भी दिए जाते थे। धीरे-धीरे ख्याति बढ़ी तो झुंड के झुंड लोग गणेशोत्सव मैदान में पहुंचने लगे। अब अपनी बात पहुंचाने के लिए लोगों को इकट्ठा करने की दिक्कत दूर हो चुकी थी। हालत यह थी कि अंग्रेज इस तरह लोगों के एकजुट होने से डरने लगे थे।

महोत्सव के मंच पर पहुंचे थे नेताजी और नायडू

देखते ही देखते गणेशोत्सव महाराष्ट्र के कोने-कोने तक पहुंच गया और राज्य के लोगों में देशभक्ति की भावना का संचार होने लगा। वैसे तो तिलक चाहते थे कि गणेशोत्सव राष्ट्रीय उत्सव में बदले। लाला लाजपत राय और बिपिनचंद्र पाल जैसे गरम दल के नेता इसके लिए तैयार भी थे पर कांग्रेस के दूसरे नेता जैसे सुरेंद्रनाथ बनर्जी, दादाभाई नौरोजी, गोपालकृष्ण गोखले, मदनमोहन मालवीय और मोतीलाल नेहरू को इसका समर्थन नहीं मिला। फिर भी गणेश उत्सव लगातार बड़ा होता गया। विदेशों में भी इसे मनाया जाने लगा।

एक समय ऐसा आया, जब इस उत्सव के मंच से नेताजी सुभाष चंद्र बोस और सरोजिनी नायडू ने भी देशवासियों को संबोधित किया था। गणेशोत्सव की पहुंच का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि इससे ब्रिटिश प्रशासन डर गया था। रॉलेट कमेटी की रिपोर्ट में भी स्पष्ट रूप से इसका जिक्र किया गया है।

मुहर्रम के जुलूस को भी बनाया था जरिया

गणेश उत्सव से भी पहले लोकमान्य तिलक मुहर्रम के जुलूस के जरिए लोगों में देशभक्ति की भावना जागृत करते रहे थे। उस वक्त बॉम्बे प्रेसिडेंसी में मुहर्रम का जुलूस सबसे प्रसिद्ध था। जाति-धर्म से ऊपर उठकर सभी लोग इस जुलूस में शामिल होते थे। कई कुलीन परिवारों की हवेली में भी ताजिया रखा जाता था। यहां तक कि बाजीराव द्वितीय के बनवाए शुक्रवार वाड़ा में ताजिया रखा जाता था। इसलिए मुहर्रम के जुलूस में शामिल होकर तिलक लोगों को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्ति पाने के लिए उत्साहित करते थे।

किसने की थी अमरनाथ गुफा की खोज?

अमरनाथ यात्रा को हिंदू धर्म के प्रमुख तीर्थों में से एक है। अमरनाथ में बर्फ के शिवलिंग की पूजा का विधान है। हर साल लाखों लोग यहां शिवलिंग के दर्शन के लिए अमरनाथ यात्रा पर जाते हैं। अमरनाथ गुफा में बर्फ से बने पवित्र शिवलिंग के दर्शन करने के लिए भक्त जून से अगस्त के बीच कश्मीर हिमालय की ये यात्रा करते हैं। ऐसी मान्यता है कि बर्फ के शिवलिंग की जो पूरी श्रद्धा के साथ पूजा-आराधना करता है। भगवान शिव उसकी सभी मनोकामनाएं पूरी करते हैं। इसी स्थान पर भगवान शिव ने अपनी पत्नी देवी पार्वती को अमरत्व का मंत्र सुनाया था और उन्होंने कई वर्ष रहकर यहां तपस्या की थी। ऐसा कहा जाता है कि इसकी खोज किसी मुस्लिम ने की थी। आइए विस्तार से जानते हैं इसकी कहानी...

जानें किसने की थी खोज?

अमरनाथ श्राइन बोर्ड की आधिकारिक वेबसाइट के अनुसार, अमरनाथ गुफा की खोज बूटा मलिक नाम के एक मुस्लिम गड़रिया ने की थी। जानवरों को चराते हुए जब बूटा की मुलाकात एक साधू से हुई। तो साधू ने उसे कोयले से भरा एक बैग दिया। बूटा ने घर पहुंचकर जब बैग खोलकर देखा तो कोयला सोने के सिक्कों के रूप में दिखा। उसके बाद बूटा उस साधू का धन्यवाद करने उस गुफा पहुंचा। हालांकि उस गुफा में वह साधू नहीं मिला। जब बूटा मलिक ने उस गुफा के अंदर जाकर देखा तो बर्फ से बना सफेद शिवलिंग चमक रहा था। इसके बाद से यह यात्रा शुरू हुई।

रिपोर्ट के मुताबिक, गुफा की खोज 1850 में खोज हुई और यात्रा शुरू होने के बाद मलिक के परिवार वाले वहां की देखभाल करते थे। लेकिन अब ऐसा नहीं है, क्योंकि साल 2000 में एक बिल जारी हुआ। जिसके नियमों के मुताबिक, परिवार को बाहर निकाल दिया गया। पहले परिवार को एक तिहाई हिस्सा मिलता था, लेकिन अब ऐसा नहीं है। श्राइन बोर्ड के गठन के बाद उसे एक तिहाई हिस्से से भी बेदखल कर दिया गया।

वेबसाइट एक कहानी के अनुसार, कश्मीर घाटी पूरी तरह से पानी में डूबी हुई थी और कश्यप मुनि ने वहां नदियों का निर्माण किया और पानी कम होने के बाद घाटी का निर्माण हुआ। उसके बाद भृगु मुनि प्रवास पर गए जहां उन्होंने गुफा की खोज की थी। गुफा के बारे में शास्त्रों में लिखा भी गया है। इस पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया गया और 150 साल बाद बूटा मलिक ने इसकी खोज की थी।

अमरनाथ यात्रा के लिए हैं दो रास्ते

बता दें कि बाबा अमरनाथ की इस वार्षिक यात्रा के लिए दो रास्ते हैं। एक अनंतनाग जिले में स्थित 48 किलोमीटर का एक पारंपरिक रास्ता जिसे नुनवान-पहलगाम पथ भी कहा जाता है। वहीं दूसरा रास्ता गांदरबल जिले में हैं, जो 14 किलोमीटर का है। यह रास्ता छोटा और संकरा है, जिसे बालटाल मार्ग कहते हैं। हालांकि इसकी चढ़ाई कठिन है। हर साल अमरनाथ यात्रा का आयोजन जम्मू-कश्मीर की सरकार और श्री अमरनाथ श्राइन बोर्ड के सानिध्य में होता है।

अमरनाथ यात्रा के लिए पंजीकरण

इस साल के लिए अमरनाथ की यात्रा का रजिस्ट्रेशन आज 15 अप्रैल से शुरू हो गए हैं। जो भी भक्त इस यात्रा में शामिल होना चाहते हैं, वो अमरनाथ श्राइन बोर्ड की वेबसाइट jksasb lnic lin पर जाकर पंजीकरण करवा सकते हैं। लेकिन क्या आपको पता है कि अमरनाथ गुफा की खोज किसने की थी। इसकी यात्रा कब से शुरू होगी। अमरनाथ श्राइन बोर्ड की वेबसाइट के मुताबिक, अमरनाथ यात्रा 29 जून से शुरू होगी। जिसके लिए आप अभी रजिस्ट्रेशन करवा सकते हैं। बिना रजिस्ट्रेशन के आप अमरनाथ की यात्रा नहीं कर पाएंगे।

न्यूज ब्रीफ..

लखविंदर राणा भाजपा प्रदेश प्रवक्ता, शाश्वत कपूर युवा मोर्चा प्रदेश उपाध्यक्ष नियुक्त

प्रचण्ड समय

शिमला . भारतीय जनता पार्टी प्रदेश अध्यक्ष डॉ राजीव बिन्दल ने नालागढ़ से पूर्व विधायक लखविन्द्र राणा को भाजपा का प्रदेश प्रवक्ता नियुक्त किया है। यह नियुक्ति तत्काल प्रभाव से लागू होगी।

इस अधिसूचना को भाजपा प्रदेश महामंत्री बिहारी लाल शर्मा द्वारा जारी किया गया।

इससे अतिरिक्त भारतीय जनता पार्टी के शीर्ष नेतृत्व से चर्चा के उपरांत शाश्वत कपूर धर्मशाला जो की सांसद कृष्ण कपूर के बेटे है उनको भारतीय जनता युवा मोर्चा का प्रदेश उपाध्यक्ष नियुक्त किया गया है।

यह नियुक्ति भाजपा पूर्व मोर्चा अध्यक्ष तिलक कपूर द्वारा जारी की गई।

कर्ण नंदा

मीडिया प्रभारी

प्रदेश में चुनाव आयोग के दिशा निर्देशानुसार आदर्श चुनाव सहिंता लागू हो गयी है

11अप्रैल के आयोजित समारोह का चित्र

प्रचण्ड समय

बेबाक्र शर्मा रघुनाथ, नूरपुर . प्रदेश में लोकसभा व छ विधानसभा उपचुनावों के मध्यनजर चुनाव आयोग के दिशा निर्देशानुसार आदर्श चुनाव सहिंता लागू हो चुकी है।

स्मरण रहे कि भारतीय चुनाव आयोग द्वारा लगाई गई आदर्श चुनाव सहिंता सभी राजनीतिक दलों, सरकारी कर्मचारियों व चुनाव लड़ने बाले सभी प्रत्याशियो के लिए एक नियमावली बनाई गई है जिसे उपरोक्त सभी को मानना जरूरी आवयश्क होता है। उलंग्न करने पर क्षेत्रीय चुनाव निर्वाचन अधिकारी द्वारा नियमावली नियमानुसार कार्यबाही का प्रावधान होता है।

काबिले गौर है कि पिछले शनिवार 13 अप्रैल को भाजपा संगठनात्मक जिला नूरपुर के सचिव रमेश कौशल ने उपमण्डल निर्वाचन अधिकारी नूरपुर एसडीएम गुरसिमर सिंह को कुछ सरकारी कर्मचारियों के खिलाफ एक पार्टी विशेष के राजनीतिक कार्यक्रम में शामिल होकर आदर्श चुनाव सहिंता उल्लंघन करने की एक लिखित शिकायत की थी। शिकायक में आरोप लगाया गया था कि 14 अप्रैल को होने वाले डॉ भीमराव अमेंदकर जयन्ती समारोह को एक राजनीतिक पार्टी के कार्यकर्ताओं ने 11 अप्रैल को ही गुज्जर तालाब (जसूर) में आयोजित कर जाति विशेष के कुछ लोगों को इक्कठा कर कांग्रेस के पूर्व विधायक को मुख्यातिथि बनाया जिसमे हरबंस नागला, कर्मचंद प्रिंसिपल गर्ल्स स्कूल नुरपुर, पुरुषोत्तम सीएसटी प्राथमिक पाठशाला सुखार, राजकुमार टीजीटी डेलीवेज मलकवाल व कमल जो क्षेत्र के जलशक्ति विभाग में कार्यरत कर्मचारियों ने सरकारी सेवा में रहते हुए भाग लिया।

भाजपा कार्यकर्ताओं की लिखित शिकायत पर जिला निर्वाचन अधिकारी जिलाधीश कांगड़ा ने कड़ा संज्ञान लेते हुए उपरोक्त सरकारी कर्मचारियों को 24 धंटे के भीतर सहायक निर्वाचन अधिकारी एस डी एम नूरपुर के कार्यालय में अपने आचरण बारे स्पष्टीकरण देने का निर्देश जारी किया था।

उपरोक्त आरोपित सरकारी कर्मचारियों ने अपना लिखित स्पष्टीकरण उत्तर सहायक निर्वाचन अधिकारी नूरपुर को सौंप दिया।

अब सहायक निर्वाचन अधिकारी आरोपित कर्मचारियों के द्वारा दिये गए स्पष्टीकरण की जांच करने के बाद ही आगामी कार्यबाही अमल में लाई जाएगी।

मतदाता पहचान पत्र बनाने के लिए नए मतदाता 04 मई तक कर सकते है आवेदन

प्रचण्ड समय

सोलन . जिला निर्वाचन अधिकारी एवं उपायुक्त सोलन मनमोहन शर्मा ने कहा कि एक अप्रैल, 2024 तक 18 वर्ष की आयु पूर्ण कर चुके युवा अपना नाम 04 मई, 2024 तक मतदाता सूची में दर्ज करवा सकते है।

मनमोहन शर्मा ने कहा कि जिला में 18 से 19 वर्ष आयु वर्ग के 9,230 नए मतदाता बनाए गए हैं जिनमें 5,025 पुरूष तथा 4,205 महिला मतदाता शामिल हैं।

उन्होंने बताया कि नामांकन भरने की अंतिम तिथि तक पात्र व्यक्ति अपना नाम मतदाता सूची में दर्ज करवा सकता है। उन्होंने कहा कि छूटे हुए युवाओं का नाम मतदाता सूची में दर्ज करवाने के लिए जिला में स्थित विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों में विशेष अभियान भी चलाया जा रहा है।

जिला निर्वाचन अधिकारी ने कहा कि जिला निर्वाचन अधिकारी कार्यालय में नियंत्रण कक्ष स्थापित किया गया है जिसका टोल फ्री नम्बर 1950 है।

इस पर कोई भी व्यक्ति चुनावी प्रक्रिया से सम्बन्धित अनियमितता बारे जानकारी दे सकता है।

इसके अतिरिक्त प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र के लिए भी अलग से नियंत्रण कक्ष स्थापित किए गए हैं।

मनमोहन शर्मा ने कहा कि युवा मतदाता अपना मतदाता पहचान पत्र वोटर हेल्पलाइन एप के माध्यम से भी बना सकते हैं। उन्होंने युवा मतदाताओं से अपना मतदाता पहचान पत्र बनाने व मतदान करने की अपील की।

मोदी, भजनलाल, गहलोत सहित कई नेताओं की दांव पर लगी है चुनावी साख

ललित शर्मा . जयपुर

राजस्थान में दो चरणों में आगामी 19 एवं 26 अप्रैल को होने वाले लोकसभा चुनाव में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा, लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला, पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत एवं वसुंधरा राजे, पूर्व उपमुख्यमंत्री सचिन पायलट, सत्तारुढ़ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के प्रदेश अध्यक्ष सी पी जोशी, कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा, पूर्व विधानसभा अध्यक्ष डा सी पी जोशी, चार केन्द्रीय मंत्रियों, कई पूर्व मंत्रियों, विधायक एवं पूर्व विधायकों सहित कई लोगों की चुनावी साख दांव पर लगी हैं।

इसी तरह राज्य में इस चुनाव में आधा दर्जन से अधिक सांसदों, इतने ही पूर्व सांसदों एवं प्रदेश के पूर्व मंत्रियों, करीब आधा दर्जन विधायक एवं पूर्व विधायकों, पैरालंपिक विजेता, पूर्व अधिकारी एवं उद्योगपति की भी चुनावी साख दांव पर है। चुनाव में भाजपा के 25, कांग्रेस के 23, बहुजन समाज पार्टी (बसपा) के 25, राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी एवं मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) का एक-एक प्रत्याशी, अन्य कई राजनीतिक दलों के उम्मीदवारों एवं निर्दलीयों सहित कुल 266 उम्मीदवार चुनाव मैदान में अपना चुनावी भाग्य आजमा रहे हैं। प्रथम चरण में 12 लोकसभा क्षेत्रों में 114 एवं दूसरे चरण में 13 लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों में 152 उम्मीदवार चुनाव मैदान में हैं।

इस बार चुनाव में भाजपा ने 400 पार का नारा दिया हैं और श्री मोदी ने चुनाव की कमान संभाल रखी और राजस्थान में भी अब तक दौसा में रोड़ शो सहित अलग अलग स्थानों पर चुनावी सभाएं कर चुके हैं और भाजपा के प्रत्याशी मोदी की गारंटी पर चुनाव लड़ रहे हैं। इस कारण प्रदेश में इस चुनाव में श्री मोदी की चुनावी साख दांव पर है। प्रदेश में भाजपा की सरकार हैं और मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा भाजपा प्रत्याशियों के समर्थन में ताबड़तोड़ चुनावी सभाए कर केन्द्र एवं राज्य सरकार की उपलब्धियां गिना रहे हैं। राज्य में तीसरी बार भी भाजपा की सभी सीटें जीतने का लक्ष्य लेकर चल रहे हैं और इस कारण उनकी भी चुनावी साख दांव पर लगी हुई हैं।

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला कोटा से भाजपा प्रत्याशी है और वह लगातार तीसरी बार लोकसभा चुनाव मैदान में है जहां उनका मुकाबला भाजपा छोड़कर कांग्रेस में आये प्रहलाद गुंजल से हैं। इस चुनाव में श्री गहलोत के पुत्र वैभव गहलोत इस बार जालोर संसदीय क्षेत्र से चुनाव लड़ रहे है इस कारण श्री गहलोत भी अपनी चुनावी साख बचाने में लगे हैं। हालांकि श्री गहलोत चुनाव नहीं लड़ रहे हैं। श्री वैभव गहलोत का भाजपा के प्रत्याशी लुम्बाराम चौधरी से सीधा मुकाबला होने के आसार हैं।

इसी तरह श्रीमती वसुंधरा राजे हालांकि वह खुद चुनाव मैदान में नहीं हैं लेकिन उनके पुत्र दुष्यंत सिंह झालावाड़-बारां संसदीय क्षेत्र से चुनाव मैदान में हैं और वह लगातार चौथी बार संसद में जाने का प्रयास कर रहे है। उनका मुकाबला पूर्व मंत्री प्रमोद जैन भाया की पत्नी एवं कांग्रेस उम्मीदवार उर्मिला जैन भाया से है। इस चुनाव में भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सी पी जोशी चित्तौड़गढ़ से लगातार तीसरी बार चुनाव लड़ रहे हैं और उनका मुकाबला पूर्व मंत्री एवं कांग्रेस प्रत्याशी उदय लाल आंजना से है।

पूर्व विधानसभा अध्यक्ष डा सी पी जोशी ने भी भीलवाड़ा से कांग्रेस प्रत्याशी के रुप में चुनाव मैदान में ताल ठोक रखी है और उनका सीधा मुकाबला भाजपा के प्रत्याशी एवं उद्योगपति दामोदर अग्रवाल से होने की संभावना है। इसी प्रकार श्री डोटासरा इस चुनाव में कहीं से उम्मीदवार नहीं हैं लेकिन प्रदेश में कांग्रेस की कमान उनके हाथों में होने से इस चुनाव में उनकी भी साख दावं पर लगी हुई हैं।

इस चुनाव में केन्द्रीय जल संसाधन मंत्री जोधपुर से फिर लोकसभा चुनाव लड़ रहे हैं और उनका मुकाबला कांग्रेस के करण सिंह उचियारड़ा से है। इसी तरह केन्द्रीय कानून मंत्री अर्जुनराम मेघवाल भी बीकानेर से फिर चुनाव लड़ रहे है और उनका इस चुनाव में कांग्रेस प्रत्याशी एवं पूर्व मंत्री गोविंद राम मेघवाल से सीधा मुकाबला माना जा रहा है। केन्द्रीय कृषि राज्य मंत्री कैलाश चौधरी भी फिर से चुनाव मैदान में हैं और बाड़मेर संसदीय क्षेत्र में उनका मुकाबला रालोपा छोड़कर कांग्रेस में आये उम्मेदाराम बेनीवाल एवं निर्दलीय उम्मीदवार एवं विधायक रवीन्द्र सिंह भाटी से होने की संभावना है।

इसी तरह इस चुनाव में सांसद भागीरथ चौधरी का अजमेर संसदीय क्षेत्र में कांग्रेस प्रत्याशी रामचन्द्र चौधरी, सांसद पी पी चौधरी का पाली में राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग की दो बार अध्यक्ष रही एवं कांग्रेस प्रत्याशी संगीता बेनीवाल से, सांसद सुखबीर सिंह जौनपुरिया का टोंक-सवाईमोधोपुर संसदीय क्षेत्र में कांग्रेस प्रत्याशी एवं पूर्व सासंद एवं विधायक हरीश चन्द्र मीना से एवं इस चुनाव में चुरु संसदीय क्षेत्र में भाजपा से टिकट कटने के बाद पार्टी छोड़कर कांग्रेस में आकर प्रत्याशी बने सांसद राहुल कस्वां का पैरालंपिक विजेता देवेन्द्र झाझड़िया से सीधा मुकाबला माना जा रहा है।

इसी प्रकार सीकर सांसद सुमेधानंद सरस्वती का सीकर संसदीय क्षेत्र में माकपा प्रत्याशी एवं पूर्व विधायक अमराराम चौधरी से सीधा मुकाबला होने के आसार है। कांग्रेस ने यह सीट गठबंधन के तहत माकपा के लिए छोड़ दी है। इस चुनाव में नागौर से पूर्व सांसद हनुमान बेनीवाल और ज्योति मिर्धा इस बार फिर चुनाव में आमने सामने हैं और रालोपा के संयोजक हनुमान बेनीवाल इंडिया गठबंधन के साथ जुड़कर रालोपा प्रत्याशी के रुप में चुनाव लड़ रहे है और कांग्रेस ने यहां भी गठबंधन के तहत अपनी सीट रालोपा के लिए छोड़ दी हैं। गत विधानसभा चुनाव में कांग्रेस छोड़कर भाजपा में आई ज्योति मिर्धा पर भाजपा ने फिर भरोसा जताते हुए लोकसभा चुनाव में उतारा हैं जहां भाजपा और रालोपा में सीधी टक्कर मानी जा रही है।

कांग्रेस छोड़कर भाजपा में आये पूर्व सांसद एवं पूर्व मंत्री महेन्द्र सिंह मालवीय आदिवासी बहुल बांसवाड़ा संसदीय क्षेत्र से चुनाव लड़ रहे हैं और उनका मुख्य मुकाबला भारतीय आदिवासी पार्टी (बीएपी) के उम्मीदवार एवं विधायक राजकुमार रोत से माना जा रहा है। इस चुनाव में कांग्रेस और बीएपी के बीच समझौता हुआ था लेकिन कांग्रेस उम्मीदवार अरविंद डामोर ने अपना नामांकन पत्र वापस नहीं लिया और यहां चुनावी मुकाबला त्रिकोणीय बनने की भी संभावना है।

इसी प्रकार पूर्व मंत्री भजन लाल जाटव करौली-धौलपुर, प्रताप सिंह खाचरियावास जयपुर शहर, मुरारी लाल मीना दौसा से, एवं बृजेन्द्र ओला झुंझुनूं संसदीय क्षेत्र से कांग्रेस प्रत्याशी एवं कन्हैयालाल मीना दौसा से भाजपा उम्मीदवार के रुप में चुनाव मैदान में अपना चुनावी भाग्य आजमा रहे हैं।

इसी प्रकार पूर्व विधायक कुलदीप इंदौरा गंगानगर से कांग्रेस, शुभकरण चौधरी झुंझुनूं एवं राव राजेन्द्र सिंह जयपुर ग्रामीण संसदीय क्षेत्र में भाजपा उम्मीदवार के रुप में चुनाव लड़ रहे हैं। इनके अलावा इस चुनाव में जयपुर ग्रामीण से अनिल चौपड़ा, अलवर से ललित यादव कांग्रेस प्रत्याशी एवं जयपुर शहर से मंजू शर्मा , उदयपुर से मन्ना लाल रावत एवं राजसमंद से महिमा कुमारी मेवाड़ भी भाजपा उम्मीदवार के रुप में चुनाव मैदान में अपना भाग्य आजमा रहे हैं। इस चुनाव में 25 लोकसभा सीटों में बांसवाड़ा में भाजपा, कांग्रेस एवं बीएपी एवं बाड़मेर में भाजपा, कांग्रेस एवं निर्दलीय के बीच त्रिकोणीय तथा नागौर में भाजपा और रालोपा एवं सीकर में भाजपा एवं माकपा के बीच सीधा मुकाबला होन के आसार हैं। इसी तरह शेष 21 सीटों पर भाजपा एवं कांग्रेस के बीच सीधा मुकाबला माना जा रहा है।

परस राम धीमान और समर्थकों ने मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह से की मुलाकात

प्रचण्ड समय . शिमला

कुल्लू जिला के आनी विधानसभा क्षेत्र से निर्दलीय प्रत्याशी रहे परस राम धीमान ने सोमवार को समर्थकों सहित मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू से मुलाकात की। निष्कासन खत्म होने के बाद परस राम पहली बार मुख्यमंत्री से मिले।

मुख्यमंत्री ने ओक ओवर में परस राम व उनके समर्थकों को पटका पहनाकर कांग्रेस पार्टी में वापसी करवाई।

समर्थकों के साथ मिलने पहुंचे परस राम के साथ कुल्लू जिला कांग्रेस कमेटी के पूर्व अध्यक्ष बुद्धि सिंह ठाकुर, पंकज परमार अध्यक्ष जिला परिषद कुल्लू, शेर सिंह ठाकुर पूर्व महासचिव डीसीसी कुल्लू, पूरन वर्मा पूर्व उपाध्यक्ष ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष आनी, कैलाश शर्मा पूर्व उपाध्यक्ष ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष आनी, विजय कुमार, सीमा वर्मा पूर्व महिला कांग्रेस अध्यक्ष आनी, गोविंद शर्मा पूर्व महासचिव युवा कांग्रेस, ओम प्रकाश, अजीत सिंह ठाकुर, पवन ठाकुर, संयोग ठाकुर, चेतन चौहान, प्रदीप ठाकुर,ईशान सिंघा, उत्तम ठाकुर,लोक राज ठाकुर, हितेश कैथ, लाल चंद, अशोक ठाकुर, संजीव ठाकुर मौजूद रहे।

परस राम व समर्थकों ने आपदा राहत कोष के लिए 51 हजार रुपये भी दिये। पूर्व प्रत्याशी ने कहा कि वह निष्ठावान कार्यकर्ता की तरह पार्टी की सेवा करेंगे। उन्हें जो भी जिम्मेदारी सौंपी जाएगी, वह उसे बखूबी निभाएंगे। इस दौरान बागवानी मंत्री जगत सिंह नेगी, सीपीएस संजय अवस्थी, हिमुडा के उपाध्यक्ष यशवंत छाजटा भी उपस्थित रहे।

प्रदेश में उत्साह व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया हिमाचल दिवस

प्रचण्ड समय . शिमला

प्रदेश में 77वां हिमाचल दिवस आज हर्षोल्लास व उत्साह के साथ मनाया गया। राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल ने शिमला के ऐतिहासिक रिज मैदान में राज्य स्तरीय हिमाचल दिवस समारोह की अध्यक्षता की तथा राष्ट्रीय ध्वज फहराया और मार्च पास्ट की सलामी ली। इस अवसर पर परेड कमांडर, आईपीएस अभिषेक के नेतृत्व में राज्य पुलिस, होमगार्ड, भारत स्काउट्स एवं गाइड्स तथा एनसीसी कैडेटों की टुकड़ियों द्वारा भव्य मार्च पास्ट प्रस्तुत किया गया।मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू भी इस अवसर पर उपस्थित थे। प्रदेशवासियों को हिमाचल दिवस की बधाई देते हुए राज्यपाल ने कहा कि यह खूबसूरत राज्य 15 अप्रैल, 1948 को 30 छोटी-बड़ी पहाड़ी रियासतों के विलय के साथ अस्तित्व में आया था। राज्य की समृद्ध संस्कृति, उच्च परम्पराएं और असीम प्राकृतिक सौंदर्य, देवभूमि की विशिष्ट पहचान है। राज्य की वास्तविक शक्ति यहां के ईमानदार, कर्मठ और विकासशील लोग हैं तथा यहां शांतिपूर्ण वातावरण व सामाजिक सौहार्द है, जो इस पहाड़ी राज्य को दूसरों से अलग बनाता है। राज्यपाल ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि राज्य के अस्तित्व में आने के बाद इस छोटे से पहाड़ी प्रदेश ने तेजी से विकास का सफर तय किया। कठिन भौगोलिक परिस्थितियां, दुर्गम क्षेत्र और अन्य जटिलताएं भी यहां के मेहनतकश लोगों के साहस को कम नहीं कर पाईं। प्रदेशवासियों ने राज्य को उन ऊंचाइयों तक पहुंचाया जो दूसरों के लिए एक उदाहरण है। उन्होंने कहा कि सीमित संसाधनों से विकास के सफर की शुरुआत करने के बाद आज हिमाचल देश भर में पहाड़ी राज्यों के विकास का आदर्श प्रस्तुत कर रहा है। इसका श्रेय यहां के ईमानदार लोगों को जाता है जिन्होंने अपनी निष्ठा और लग्न से प्रदेश को विकास के इस आयाम तक पहुंचाया है। उन्होंने विश्वास जताया कि प्रदेशवासी भविष्य में भी इसी उत्साह के साथ राज्य को प्रगति के पथ पर अग्रसर रखने में सदैव प्रयासरत रहेंगे।

श्री शुक्ल ने कहा कि युवा ही राष्ट्र की असली संपत्ति हैं, जो देश को विकास के पथ पर आगे बढ़ा सकते हैं। उन्होंने युवाओं में बढ़ते नशे पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि यह स्थिति समाज के लिए एक गंभीर खतरा है। इस सामाजिक बुराई के खिलाफ हमें मिलकर काम करना चाहिए। इसके लिए, शिक्षण संस्थान, समाज के सभी वर्ग और युवाओं को जोड़कर एक प्रभावी संदेश देना होगा ताकि उनकी ऊर्जा व सामर्थ्य का राष्ट्र निर्माण में सदुपयोग हो सके। उन्होंने प्रदेशवासियों से आग्रह किया कि वे इस सामाजिक बुराई के खिलाफ मजबूती से पहल करें और प्रदेश को और सशक्त बनाने में योगदान दें।

इस अवसर पर, राज्यपाल ने प्रदेश के उन महान सपूतों के प्रति आभार व्यक्त किया जिन्होंने हिमाचल प्रदेश के विकास में योगदान दिया है। उन्होंने राज्य के महान स्वतंत्रता सेनानियों और राष्ट्र के लिए सर्वोच्च बलिदान देने वाले शहीदों को भी श्रद्धांजलि अर्पित की। श्री शुक्ल ने सभी नागरिकों से आगामी चुनाव में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए अपने मताधिकार का प्रयोग करने की अपील भी की। उन्होंने विश्वास जताया कि वे भारत के संविधान के आदर्शों और मूल्यों को मजबूत करने के लिए अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे। इस अवसर पर रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

स्वास्थ्य मंत्री (कर्नल) धनी राम शांडिल, राजस्व मंत्री जगत सिंह नेगी, लेडी गवर्नर जानकी शुक्ल, मुख्य सचिव प्रबोध सक्सेना, पुलिस महानिदेशक संजय कुण्डू, प्रधान सचिव, सचिव सहित प्रदेश सरकार के वरिष्ठ अधिकारी तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

सोनीपत सीट पर हैट्रिक के लिए भाजपा को करनी होगी मशक्कत

राजेंद्र सिंह जादौन . चंडीगढ़

हरियाणा के जाटलैंड की सोनीपत लोकसभा सीट से इस बार बीजेपी हैट्रिक बनाना चाहती है।इस रणनीति के तहत पार्टी ने अपने राई के विधायक मोहन लाल बडोली को जंग में उतारा है। इस सीट पर भाजपा का मुख्य विपक्षी दल कांग्रेस से सीधा मुकाबला संभावित है। कांग्रेस प्रत्याशी का अभी इंतजार है।कांग्रेस अगर कोई बाहरी प्रत्याशी उतारती है तो भाजपा का रास्ता आसान हो जाएगा।इस सीट से बाहरी प्रत्याशी हारते रहे है।बसपा ने इस सीट पर उमेश गहलावत को उतारा है।जेजेपी की और से अभी प्रत्याशी नही घोषित किया गया। जेजेपी ने प्रदेश की सभी दस लोकसभा सीटो पर लड़ने का ऐलान किया है।

कांग्रेस पिछली दो हार का बदला लेना चाहेगी। वर्ष 2014 और 2019 में भाजपा के रमेश कौशिक इस सीट से जीते थे। हालांकि, इस बार दोनो ही दलों को जीत के लिए कड़ी परीक्षा देनी होगी। सोनीपत लोकसभा सीट कई मायने में अपने आप में अलग है। यहां से बड़े-बड़े दिग्गज केवल बाहरी कैंडिडेट होने के कारण चुनाव हार चुके हैं। अगर यहां के जातीय समीकरण देखें तो इस लोकसभा क्षेत्र के कुल वोटों का एक तिहाई वोटर जाट समुदाय से आता है। इतना ही वोट पिछड़ा वर्ग श्रेणी का है। एक तिहाई वोटों में बनिया, ब्राह्मण, पंजाबी, सिख, मुस्लिम और अनुसूचित जाति के वोटर आते हैं। इस लोकसभा क्षेत्र से आज तक केवल तीन अवसरों को छोड़कर हमेशा जाट समुदाय से सांसद बनता रहा है। ब्राह्मण समुदाय से एक बार अरविंद शर्मा और दो बार रमेश चंद्र कौशिक सांसद हैं। अरविंद शर्मा यहां से निर्दलीय चुनाव जीत चुके हैं जो अपने आप में एक रेकॉर्ड है। वहीं, लगातार दो बार रमेश चंद्र कौशिक बीजेपी से लोकसभा में पहुंचे। बीजेपी ने इस बार रमेश चंद्र कौशिक का टिकट काटकर फिर से ब्राह्मण चेहरे पर ही दांव लगाया है। बीजेपी ने इस बार राई से विधायक मोहन लाल बडोली को टिकट दिया है। यहां से प्रमुख रूप से हारने वाले उम्मीदवारों में पूर्व उप प्रधानमंत्री देवीलाल और पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा भी शामिल हैं।

प्रचण्ड समय

सोनीपत लोकसभा क्षेत्र में नौ विधानसभा सीट हैं। इसमें सोनीपत जिले की सोनीपत, राई, गन्नौर, खरखौदा, बरोदा और गोहाना हैं तो जींद जिले में सफीदों, जींद और जुलाना को शामिल किया गया है। इस सीट पर करीब तीन चौथाई मतदाता ग्रामीण क्षेत्र के हैं। शहरी मतदाताओं की संख्या करीब एक चौथाई ही है। इस बार सबसे बड़ा सवाल यह है कि क्या बीजेपी इस सीट पर अपनी हैटट्रिक दर्ज कर पाएगी या कांग्रेस यहां पर जीत दर्ज कर पिछली दो हार का बदला ले पाएगी।

इस सीट पर कांग्रेस से 2019 का चुनाव पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने लड़ा था। भूपेंद्र सिंह हुड्डा पर बाहरी उम्मीदवार का ठप्पा लग गया और वह चुनाव हार गए थे।

इस बार कांग्रेस यहां से किस मैदान में उतरेगी यह एक बड़ा सवाल है। कांग्रेस की ओर से पहलवान बजरंग पुनिया को उतारे जाने की चर्चा है। बजरंग पुनिया अंतरराष्ट्रीय पहलवान हैं और जंतर-मंतर पर महिला पहलवानों के धरने पर सक्रियता से उनका ग्राफ बढ़ा है। वह जाट समुदाय से आते हैं। क्षेत्र का जाट समुदाय पिछली दो हार से मायूस है। इस बार वह इस जाटलैंड सीट को किसी भी सूरत में वापस पाना चाहता है। कांग्रेस की ओर से सतपाल महाराज का नाम भी चर्चा में है। हिसार के सांसद रहे बृजेंद्र सिंह के बीजेपी छोड़कर कांग्रेस में शामिल होने से चर्चा चल रही है कि वह सोनीपत लोकसभा सीट से चुनाव लड़ सकते हैं। लेकिन, बृजेंद्र सिंह सोनीपत के लिए बाहरी उम्मीदवार होंगे और इस सीट का इतिहास यह है कि बाहरी उम्मीदवार चुनाव नहीं जीत पाया है।

बीजेपी नरेंद्र मोदी के नाम और मोदी की गारंटी के नारे के दम पर एक बार फिर यहां से जीत को लेकर आश्वस्त है, लेकिन कांग्रेस को किसान आंदोलन और महिला पहलवानों के सरकार के विरोध में किए गए आंदोलन का बड़ा सहारा है। कांग्रेस को यह लगता है कि सोनीपत के मतदाता इस बार बीजेपी की हैटट्रिक को रोककर कांग्रेस के साथ खड़े हो सकते हैं। दोनों दलों को अपनी जीत को सुनिश्चित करने के लिए पसीना बहाना होगा। जेजेपी भी इस सीट पर बीजेपी और कांग्रेस के उम्मीदवार घोषित होने के बाद ही अपना उम्मीदवार तय करेगी।

क्या है इजराइल की वॉर कैबिनेट, जिसने ईरान को मुंहतोड़ जवाब देने का लिया फैसला?

ईरान ने शनिवार रात को इजराइल पर हमला किया। इस हमले के बाद इजराइल की वॉर कैबिनेट सक्रिय हो गई और मीटिंग की। रविवार को हुई बैठक में फैसला लिया गया कि अब ईरान को मुंहतोड़ जवाब दिया जाएगा। हालांकि, इजराइल ईरान से किस तरह बदला लेगा, यह फैसला नहीं लिया गया। 1 अप्रैल को इजराइल ने सीरिया में ईरानी एम्बेसी पर एयर स्ट्राइक की थी, जिसमें ईरान के 2 टॉप ऑर्मी कमांडर समेत 13 लोगों की मौत हुई थी।

इस घटना के बाद ईरान ने बदला लेने के लिए इजराइल पर अटैक की धमकी दी थी। शनिवार को ईरान ने इजराइल पर हमला करके अपनी धमकी को अंजाम दिया। इसके बाद इजराइल ने वॉर कैबिनेट में बैठक की और आगे की रणनीति तय की। जानिए, क्या है इजराइली वॉर कैबिनेट, क्यों बनी और यह करती क्या है?

कब और क्यों बनी वॉर कैबिनेट?

इस वॉर कैबिनेट की शुरुआत इजराइल-हमास जंग शुरू होने के पांच दिन बाद यानी 11 अक्टूबर 2023 को हुई थी। हमला होते ही देश में इजराइल के विपक्षी दलों ने तत्कलीन पीएम बेंजामिन नेतन्याहू से सवाल करने शुरू कर दिए थे। जनता में रोष बढ़ रहा था। इस दबाव का जवाब देने के लिए वॉर कैबिनेट की नींव पड़ी। इस तरह एक ऐसा ग्रुप बना जिसमें सरकार के लोग और विपक्षी दोनों शामिल थे।

वॉर कैबिनैट का लक्ष्य था कि जंग पर नजर रखे। इससे जुड़े फैसले ले और नेतन्याहू सरकार के मंत्रियों की शक्ति को कम किया जा सके। अपने बयान में नेतन्याहू ने साफ कहा था कि इजराइल गाजा पर जमीन आक्रमण कब शुरू करेगा, इसका जवाब वॉर कैबिनेट देगी।

वॉर कैबिनेट में कौन-कौन लेते हैं निर्णय?

वॉर कैबिनेट में तीन ऐसे प्रमुख मेम्बर हैं जो निर्णय लेते हैं और वोट करते हैं। इनमें पहले मेम्बर हैं पीएम बेंजामिन नेतान्याहू। वह इजराइल में लम्बे समय तक काम करने वाले पीएम हैं। दूसरे मेम्बर हैं योव गैलेंट जो नेतन्याहू की पार्टी के नेता होने के साथ इजराइल के रक्षा मंत्री भी हैं। इनके अलावा तीसरे मेम्बर बेनी गैंट्ज़ है जो एक पूर्व सैन्य प्रमुख हैं, जिन्होंने 2014 में गाजा पर इज़राइल के जमीनी आक्रमण की रूपरेखा तैयार की थी। वह नेतन्याहू के मुख्य राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियों में से एक रहे हैं, लेकिन पिछले साल अक्टूबर में हमलों के बाद उनकी आपातकालीन सरकार में शामिल हो गए।

विपक्षी नेता गैंट्ज़ और उनके सहयोगियों को नेतन्याहू के पिछले सहयोगियों की तुलना में अधिक उदार, अनुभवी और व्यावहारिक माना जाता है, जो इसके निर्णयों को अधिक विश्वसनीयता प्रदान करते हैं। इसके अलावा इसमें दो ऑब्जर्वर भी हैं। हालांकि इनके पास वॉर कैबिनेट में वोटिंग का अधिकार नहीं है। इसके अलावा कुछ ऐसे मेम्बर भी होते हैं जो सीधे तौर पर वॉर कैबिनेट का हिस्सा नहीं होते, लेकिन सरकार में मंत्रियों सिक्योरिटी कैबिनेट में शामिल होते हैं।

प्रचण्ड समय

वॉर कैबिनेट का क्या है काम?

इजराइल डेमोक्रेसी इंस्टीट्यूट के प्रोफेसर अमिकाई कोहेन कहते हैं, इजराइली वॉर कैबिनेट का काम बॉर्डर सिक्योरिटी को लेकर कड़े निर्णय लेना है। इसके अलावा जंग के दौरान सीज फायर पर भी महत्वपूर्ण फैसले लेने का काम यही वॉर कैबिनेट करती है।

इस कैबिनेट को लेकर कोई कानून नहीं बनाया गया है। यह स्वतंत्र रूप से काम करती है और सही मायने में जंग के दौरान या उसके मैनेजमेंट से जुड़े फैसले लेती है। इसके साथ ही दुश्मन के हमले के बाद कैसे जवाब देना, क्या कदम उठाए जानते हैं? ऐसे तमाम निर्णय लेने का काम इजराइल की वॉर कैबिनेट करती है।

वो डकैती जिससे मशहूर हो गई मोना लिसा, भीड़ देखने आती थी खाली दीवार

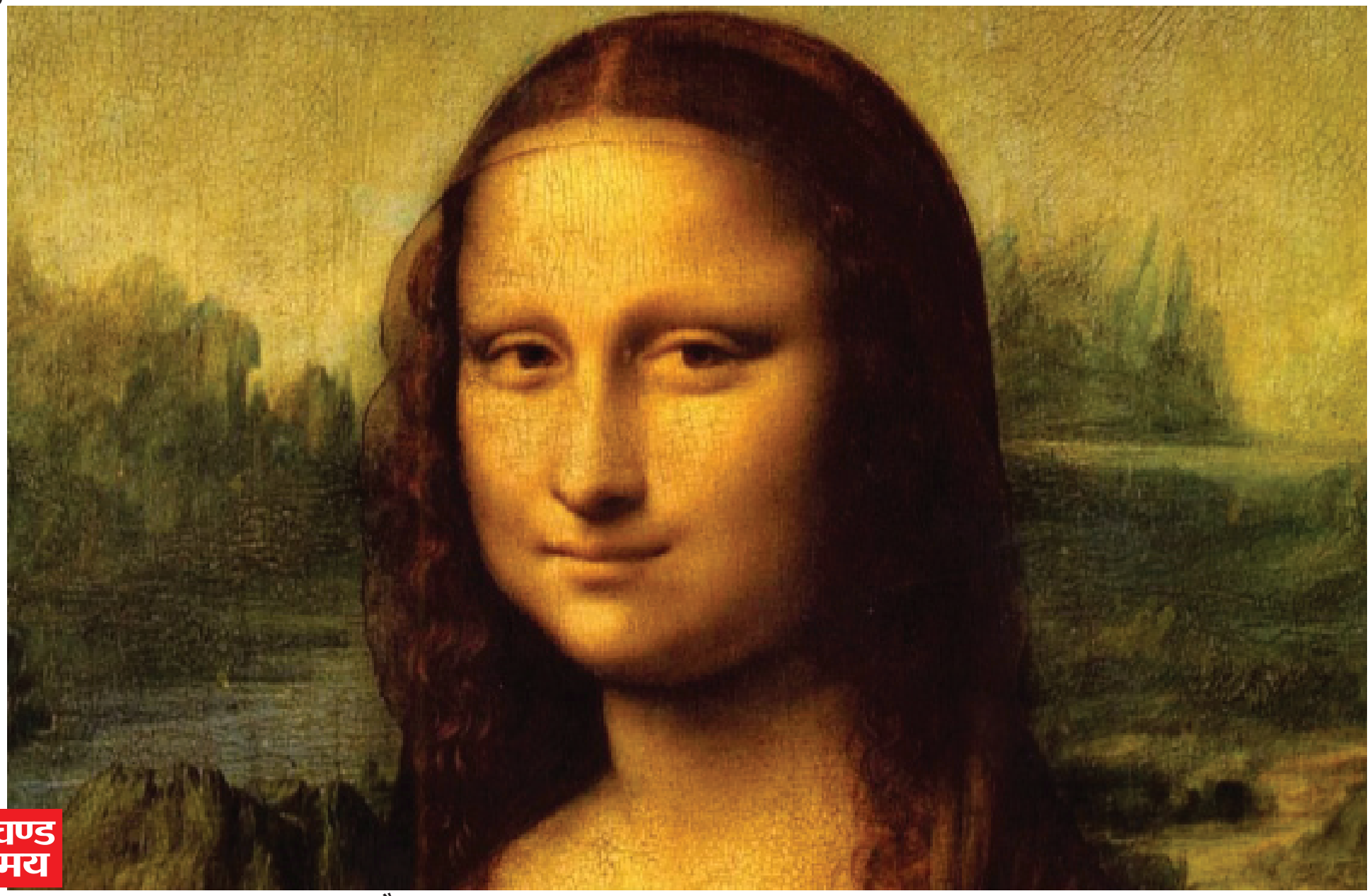

लियोनार्डो द विंची ने अपने जीवन में कई पेंटिंग बनाईं थी, लेकिन 1503 में उनकी बनाई मोना लिसा कई सालों बाद भी लोगों की दिलचस्पी का विषय बनी हुई है। क्या आपने कभी सोचा है कि यह पेंटिंग आखिर इतनी मशहूर क्यों है? ऐसा नहीं है कि इस पेंटिंग में कुछ कमी है। लेकिन इतिहास में इस स्तर की और भी बेहतरीन पेंटिंग बनाई जा चुकी है। लियोनार्डो की मोना लिसा पेंटिंग के लोकप्रिय बनने के पीछे एक दिलचस्प कहानी है जिसमें अहम भूमिका एक चोर ने निभाई। आइए जानते हैं पूरी कहानी।

मोना लिसा उन पहली पेंटिंगों में से एक है जिसमें बैठे हुए सब्जेक्ट को एक काल्पनिक लैंडस्केप के आगे दिखाया गया हो। पेंटिंग को शुरू से ही कला की दुनिया में सराहया जाता रहा है। 1860 के दशक में कला के विद्वानों ने इसे मास्टरपीस बताना शुरू कर दिया था। लेकिन उस समय तक भी यह पेंटिंग आम जनता पर अपनी छाप नहीं छोड़ पाई थी। चीजें तब बदली जब 1911 में मोना लिसा के चोरी होने की खबर आग की तरह फैल गई।

रातों-रात मोना लिसा हो गई मशहूर

मोना लिसा पेंटिंग को 1804 में पेरिस के लूव्र म्यूजियम में टांगा गया था। लेकिन 19वीं शताब्दी तक भी इसे देखने वालों की ज्यादा भीड़ नहीं हुआ करती थी। इस पेंटिंग की किस्मत बदली साल 1911 में। दरअसल, 21 अगस्त, 1911 को इटली के कुछ लोगों ने लूव्र म्यूजियम से पेंटिंग को गायब कर दिया। इन चोरों में से एक व्यक्ति म्यूजियम में कर्मचारी था। उन लोगों का मानना था कि क्योंकि लियोनार्डो द विंची इटली के थे, इसलिए यह पेंटिंग इटली की धरोहर है। वो लोग इस पेंटिंग को वापिस इटली लेकर जाना चाहते थे।

चूंकि मोना लिसा ज्यादा प्रसिद्ध नहीं थी, इसलिए पूरे एक दिन तक किसी का इस पर ध्यान भी नहीं गया कि पेंटिंग चोरी हो चुकी है। चोरी की खबर फैलती ही आम लोगों के बीच पेंटिंग चर्चा का केंद्र बिंदु बन गई।

पाब्लो पिकासो से हुई पूछताछ

मोना लिसा पेंटिंग की चोरी इतनी बड़ी घटना बन गई कि फ्रेंच कैबिनेट की इस मामले पर एक मीटिंग बुलाई गई। पेंटिंग को जगह-जगह ढूंढा जाने लगा। पेंटिंग का पता लगाने वाले को एक बड़ा इनाम देने की घोषणा भी हुई। इस बीच चोरी का शक स्पेन के महान पेंटर पाब्लो पिकासो पर भी गया था। हालांकि, कुछ सबूत न मिलने पर उन्हें जाने दिया गया।

प्रचण्ड समय

म्यूजियम में पेंटिंग की खाली जगह को देखने के लिए लोगों का जमावड़ा लग गया। रिपोर्ट्स के अनुसार, उस समय मोना लिसा के पोस्टकार्ड छपने लगे। कुछ लोगों ने तो मोना लिसा के जैसी गुड़िया भी बनानी शुरू कर दी थी। जब 2 सालों बाद 'मोना लिसा' वापस मिली तो लाखों लोग लूव्र म्यूजियम पेंटिंग देखने पहुंचे। आकंड़ों के मुताबिक, सिर्फ मोना लिसा को देखने ही दो दिनों में एक लाख से ज्यादा लोग म्यूजियम आए थे।

मोना लिसा का अमेरिका से लेकर रूस तक का दौरा

इस पूरी घटना ने मोना लिसा की तस्वीर को लोगों के दिमाग में अच्छे से गढ़ दिया। दुनियाभर के लोगों में यह महिला पहचानी जानें लगी। 1963 में मोना लिसा सात हफ्तों के लिए फ्रांस से अमेरिका के दौरे पर गई थी। अमेरिका के नेशनल गैलरी ऑफ आर्ट और न्यूयॉर्क मेट्रोपॉलिटन म्यूजियम ऑफ आर्ट में पेंटिंग को देखने दस लाख से ज्यादा लोग उमड़ पड़े थे। पीबीएस की रिपोर्ट के मुताबिक, मोना लिसा का ऐसा ही स्वागत रूस और जापान में भी देखा गया जब 1974 में पेंटिंग को वहां के म्यूजियम में प्रदर्शित किया गया।

केकेआर को चीयर करने सुहाना खान संग पहुंचीं अनन्या पांडे, शाहरुख की बेटी की स्माइल ने लूटा दिल

मुंबई. 14 अप्रैल को आईपीएल 2024 का 28 वां मैच खेला गया। इस दौरान कोलकाता नाइटराइडर्स और लखनऊ सुपर जाएंट्स आमने-सामने थे। इस मुकाबाले को शाहरुख खान की टीम केकेआर ने अपने नाम कर लिया है। खास बात ये है कि इस मैच को देखने के बॉलीवुड के कई बड़े स्टार्स पहुंचे थे। इस लिस्ट में किंग खान की बेटी सुहाना खान का भी नाम शामिल है। इस दौरान सुहाना के साथ उनकी पक्की दोस्ती और बॉलीवुड एक्ट्रेस अनन्या पांडे भी मौजूद थी। इस दौरान की फोटोज इंटरनेट वर्ल्ड में तेजी से वायरल हो रही हैं।

अनन्या पांडे और सुहाना खान ने लूटी महफिल

एंटरटेनमेंट वर्ल्ड की फेमस एक्ट्रेस सुहाना खान ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट को अपडेट करते हुए कुछ तस्वीरें शेयर की हैं, जिनमें वो अपनी दोस्त अनन्या पांडे के साथ नजर आ रही हैं। इस फोटो में दोनों कोलकाता नाइटराइडर्स और लखनऊ सुपर जाएंट्स के बीच हुए मुकाबले को देख रही हैं। फोटो में दोनों ने कैमरे के सामने किलर पोज भी दिया है। बता दें कि लोगों की नजर सुहाना खान की एक तस्वीर पर अटक गई है, जिसमें वो स्माइल करती नजर आ रही हैं। सुहाना की मुस्कान पर हर कोई फिदा हो गया है।

सुहाना खान और अनन्या पांडे की दोस्ती

बताते चलें कि सुहाना खान और अनन्या पांडे की दोस्ती काफी गहरी है। रिपोर्ट्स की मानें तो सुहाना और अनन्या बचपन से एक दूसरे को जानते हैं। इन दोनों को अक्सर एक साथ स्पॉट किया जाता है। मालूम हो कि जहां एक तरफ अनन्या पांडे ने अबतक कई बॉलीवुड फिल्मों में अपना जलवा बिखेरा हैं। वहीं शाहरुख खान की लाडली सुहाना खान ने हाल ही में अपना डेब्यू किया है। जानकारी के लिए बता दें कि सुहाना खान बेहद हसीन हैं और उनकी हर अदा पर लोग अपनी जान छिड़कते हैं।

सलमान खान के घर के बाहर फायरिंग मामले में पुलिस ने लिया एक्शन, हाथ लगे 2 संदिग्ध

मुंबई. बॉलीवुड के सुपरस्टार सलमान खान इन दिनों चर्चा में बने हुए हैं। बीते दिन सलमान खान के घर के बाहर कुछ लोगों ने ताबड़तोड़ गोलियां चलाईं। इस वारदात ने मुंबई पुलिस को हिलाकर रख दिया। रिपोर्ट्स की मानें तो इस हमले की साजिश कुख्यात गैंगस्टर लॉरेंस बिश्नोई के भाई अनमोल बिश्नोई ने रची थी। अमेरिका में अनमोल बिश्नोई ने पूरा प्लान तैयार किया और फिर मुंबई में शूटरों ने इस हमले को अंजाम दिया। इस बीच पुलिस को भी बड़ी सफलता मिल गई है। बताया जा रहा है कि क्राइम ब्रांच ने दो लोगों को हिरासत में ले लिया हैं।

पुलिस ने लिया एक्शन

एंटेरटेनमेंट जगत के सुपरस्टार सलमान खान के घर के बाहर फायरिंग मामले में एक अपडेट सामने आया है। बता दें कि इस हमले के बाद से ही पुलिस हरकत में आ गई थीं। अब पुलिस ने एक्शन लेते हुए 2 लोगों को हिरासत में ले लिया है। रिपोर्ट्स की मानें तो क्राइम ब्रांच ने जिन लोगों को हिरासत में लिया है उन्होंने फायरिंग करने वालों की मदद की थीं। फिलहाल पुलिस इस मामले में जांच कर रही है। पुष्टि होनो के बाद पुलिस इन दोनों को गिरफ्तार भी कर सकती है। वहीं अब हमलावरों की तस्वीरें भी सामने आ गई हैं। इसके बाद पुलिस अब इन शूटर्स की तलाश कर रही है।

सलमान खान को पहले भी मिल चुकी है धमकी

बताते चलें कि सलमान खान को पहले भी लॉरेंस बिश्नोई की तरफ से कई बार धमकी मिल चुकी है। ऐसे में सरकार ने सलमान को वाई प्लस सिक्योरिटी दी है। अब देखना ये दिलचस्प होगा कि पुलिस कब तक उन शूटर्स को गिरफ्तार करती हैं जिन्होंने सलमान खान के घर के बाहर फायरिंग की थी। मालूम हो कि सलमान खान ने हाल ही में अपनी अपकमिंग मूवी सिकंदर को लेकर अपडेट दिया है। भाईजान ने बताया कि उनकी ये फिल्म साल 2025 में ईद के मौके पर रिलीज होगी।

भीड़ में तमन्ना भाटिया को प्रोटेक्ट करते नजर आए विजय वर्मा, फैंस बोले- 'ये मस्त जोड़ी हैं'

मुंबई. एक्टर विजय वर्मा और एक्ट्रेस तमन्ना भाटिया अक्सर एक साथ नजर आते हैं और पैपराजी के कैमरे में कैद हो जाते हैं। विजय वर्मा और तमन्ना भाटिया को लेकर आए दिन कयासबाजी होती है कि दोनों एक-दूसरे को डेट कर रहे हैं। हालांकि, दोनों ने इस बात को लेकर कभी खुलकर बात नहीं की है। फिलहाल, विजय वर्मा और तमन्ना भाटिया एक बार फिर साथ में स्पॉट हुए हैं। दोनों को देखते ही पैपराजी के कैमरे एक्टिव हो गए है और वहां पर तमाम लोग पहुंच गए। विजय वर्मा और तमन्ना भाटिया का नया वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। इस वीडियो में विजय वर्मा भीड़ के बीच तमन्ना भाटिया को प्रोटेक्ट करते नजर आ रहे हैं।

विजय वर्मा और तमन्ना भाटिया का वीडियो हुआ वायरल

एंटरटेनमेंट इंडस्ट्री के स्टार्स विजय वर्मा और तमन्ना भाटिया एक-दूसरे के साथ नजर आते हैं और दोनों साथ में वेकेशन पर भी जाते हैं। विजय वर्मा और तमन्ना भाटिया के रिलेशनशिप को लेकर अटकलें लगती रहती हैं। फिलहाल, विजय वर्मा और तमन्ना भाटिया एक बार फिर पैपराजी के कैमरे में कैद हो गए और दोनों का वीडियो वायरल हो रहा है। इस वीडियो में आप देख सकते हैं कि विजय वर्मा अपनी कथित गर्लफ्रेंड को भीड़ के बीच प्रोटेक्ट करते नजर आए। विजय वर्मा और तमन्ना भाटिया का वीडियो वायरल होने के बाद फैंस दोनों पर जमकर प्यार लुटा रहे हैं। एक फैन ने लिखा है, 'ये मस्त जोड़ी है।' एक फैन ने लिखा है, 'दोनों साथ में अच्छे लगते हैं।' एक फैन ने लिखा है, 'शादी कर लो दोनों।' एक यूजर ने लिखा है, 'केयर।'

स्वामी, संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक अश्वनी वर्मा- पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेवार। साई कुंज, नॉर्थ ओक, संजौली, शिमला, हिमाचल प्रदेश- 171006 से प्रकाशित और डीबी कॉर्प लिमिटेड, जीटी रोड, निकट बस स्टैंड सुभानपुर, हमीरा, जिला कपूरथला, पंजाब- 144802 द्वारा मुद्रित।